आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902 डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2017-2019

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 2 | अंक 20 | उदयपुर बुधवार 15 नवम्बर 2017 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

हिन्दी के रागी बालकवि बैरागी

- डॉ. तुक्तक भानावत -

शब्द रंजन कार्यालय में 11 नवबंर को बालकवि बैरागीजी का भावभीना स्वागत किया गया। डेढ़ घण्टे की मुलाकात में राजभाषा हिन्दी की दशा-दिशा, उसके संघर्ष, रोड़े-अवरोधक, वैश्विक स्वरूप, स्वीकार्यता तथा बदलते संदर्भों में हिन्दी-हिंग्लिश पर डॉ. महेन्द्र भानावत के साथ खुलकर बातचीत।

हिन्दी के उपकारी

एक सवाल के जवाब में बालकवि ने कहा कि हिंदी पर दो लोगों का बहुत उपकार है जो कभी भुलाया नहीं जा सकता। वे हैं लता मंगेशकर और भारतीय रेल। लता मंगेशकर के हिंदी

गानों को सुनने के लिए कई अहिंदी भाषियों ने हिंदी सीखी। देशभर में करोड़ों यात्रियों को रोज अपने गंतव्य तक पहुंचाने वाली भारतीय रेल हर प्रांत में हिंदी के शब्द लेकर जाती है और बदले में क्षेत्रीय भाषा का कोई न कोई शब्द अपने में समाहित कर ले आती है।

अंग्रेजी की बढ़त से खफा

अंग्रेजी के बढ़ते चलन से बेहद खफा नजर आए बालकवि ने कहा कि अब स्थिति यह हो गई है कि जैसे हम अक्सर अपने परिवार के साथ बालबच्चों का जिक्र करते हैं पर अब सिर्फ हमारे सिर पर बाल हैं और बच्चे अंग्रेजी शिक्षा पाकर विदेश चले गये हैं। यह हमको तय करना है कि हमें अंग्रेजी माध्यम में पढ़ाकर बच्चों विदेश भेजना है या हिन्दुस्तान में रख कर उन्हें देश-सेवा के लिए संकल्पित करना है।

क्षेत्रीय भाषाओं का संघर्ष

हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं के संघर्ष के सवाल पर बैरागीजी ने कहा कि इस देश में वो ही हिंदी काम करेगी और उसी हिंदी का अस्तित्व बचेगा जिसे गैर हिंदी भाषी लोग काम में लेंगे। हिंदी के पैरोकार बनने से पहले हम खुद तो हिंदी को ठीक से बोल, समझ और सीख लें! राजभाषा का नियम कहता है कि अंग्रेजी में पत्र लिखा है और हस्ताक्षर हिंदी में किये हैं तो आपको उत्तर हिंदी में मिलेगा। अगर हिंदी में पत्र लिखा है और हस्ताक्षर अंग्रेजी में किये हैं तो उत्तर अंग्रेजी में आयेगा।

राजस्थान क श्रेणी वाला राज्य

राजभाषा अधिनियम में वर्णित राजस्थान राज्य क श्रेणी में आता है। नियमानुसार यहां हर होर्डिंग संकेतक, पत्र, आदेश आदि पर सबसे पहले हिंदी में व उसके बाद आवश्यकता हो तो अंग्रेजी में होनी चाहियें।

बालकवि बैरागी ने कहा -

- मैं दिनकर के वंश में पैदा हुआ और कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' का एकलव्य हूं। मेरा जिन्होंने निर्माण किया उनमें पुरुषोत्तमदास टंडन, रामधारीसिंह 'दिनकर', शिवमंगलसिंह 'सुमन' एवं भवानीप्रसाद मिश्र मुख्य हैं। महावीर अधिकारी, रवीन्द्र माथुर, राहुल बारपूते और धर्मवीर भारती ने मुझे गद्य लेखन में बहुत तवज्जो दी। भारतीजी ने तो मेरा पूरा उपन्यास धारावाहिक रूप में धर्मयुग में छापा किन्तु कविताएं नहीं छापीं। बोले कि कविताएं छापकर मैं आपकी पाठक संख्या कम नहीं करना चाहता।
- मेरे पास लोगों के लिखे करीब एक लाख पत्र सुरक्षित हैं और मैं अब भी प्रतिदिन औसतन 20-25 पत्र लिखता हूं।
- हिन्दी को आपका एक कंधा ही काफी है। उसके कशीदे पढ़ने में चार कंधे न लगायें जो मुर्दों को लगाये जाते हैं।
- मुझे कोई एक भी ऐसा अंग्रेज बतादें जो किसी सरकारी दफ्तर में नौकर हो और पैसा लेता हो।
- मैं प्रतिदिन गीता का एक अध्याय पढ़ता हूं।

विदेशों में हिंदी

बालकवि ने संस्मरण सुनाते कहा कि एकबार वे एक महीने के लिए जर्मनी गये तो लोगों ने पूछा कि आप सिर्फ हिंदी बोलते हैं। वहां आपको भाषा की समस्या आयेगी। इस पर बालकवि ने कहा कि यह समस्या जर्मनी वालों की है जिन्होंने मुझे बुलाया, मेरी नहीं है। मुझे समझना है तो वे दुभाषिया रखें। एक अन्य संस्मरण में कहा कि एकबार वे डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी के बुलावे पर इंग्लैंड गये। वहां एक जगह उन्हें कुछ युवक सेव इंग्लिश का नारा लगाते दीखे। बालकवि ने उन्हें रोक कर पूछा कि माजरा क्या है। इस पर युवकों ने कहा कि कुछ सरदार बाजार में तब तक सौदा नहीं देते जब तक उनकी भाषा में बात न की जाय। जब उन्हें पता चला कि सौदे की भाषा हिंदी है तो वे बेहद प्रसन्न हुए।

विदेशों में हिंदी का ही सहारा

विदेशों में हिंदी के प्रयोग के संदर्भ में बालकवि ने बताया कि वे 18-20 देशों में घूमे हैं मगर कहीं भी अंग्रेजी के शब्द का उपयोग नहीं किया। हिंदी प्रेमियों से उनका निवेदन था कि हिंदी शब्दों का दैनिक जीवन में अधिकाधिक प्रयोग करें और अन्यों को भी प्रोत्साहित करें। हिंदी आदान-प्रदान की भाषा है। कुछ शब्द हम दें, कुछ शब्द उधार लें फिर देखिये भाषा का मर्म कितने सुंदर अंदाज में सबके दिलों को जीत लेता है। संघर्ष राजभाषा का है, राष्ट्रभाषा का नहीं। राष्ट्र भाषा निर्ववाद रूप से हिंदी है।

हिंदी राष्ट्रीय से अधिक अंतर्राष्ट्रीय

बालकवि ने कहा कि मैं कई महान लेखकों, विचारकों की समृद्ध भाषायी एवं लेखन परंपरा में पला बढ़ा हूं। हिंदी ही राष्ट्र का उज्ज्वल भविष्य है। यह विश्व पटल पर छायी हुई है। बस इसे अपने घर में अपनों से और अधिक मान-सम्मान की दरकार है। जो हिंदी की पैरवी करते हैं उनका यह भी दायित्व है कि वे हिंदी की सेवा करने वालों के लिए रोजगार के सर्वोत्तम अवसर पैदा करें। डाक्टरों और वैज्ञानिकों का यह दायित्व है कि वे उच्चतर कक्षाओं के पाठ्यक्रम के लिए हिंदी की सवोत्तम पुस्तकें लिखें।

क्या हम हिंदी में और हमारे में हिंदी है!

बालकवि ने कहा कि राजभाषा के अधिनियम के प्रावधानों का अक्षरश: पालन हो जाय तब भी हिंदी और अधिक मजबूत स्थिति में आ सकती है। उन्होंने मीडिया के लोगों से आह्वान किया कि वे शुद्ध हिंदी में लेखन करें ताकि नई पीढ़ी उसे पढ़कर खुद को अधिक संस्कारित कर सकें। हम अपने अंतर्मन में झांकें और देखें कि क्या हम हिंदी के हैं और क्या हमारे में हिंदी है।

पीआईएमएस का उत्कृष्ट प्रदर्शन

आरएनटी मेडिकल कॉलेज में आयोजित खेल दिवस 'वर्चस्व 2017' के तहत पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ़ मेडिकल साइंसेस (पीआईएमएस) हॉस्पिटल, उमरड़ा के छात्रों ने उल्लेखनीय प्रदर्शन कर पुरुष वर्ग बॉस्केटबॉल में प्रथम तथा गर्ल्स में द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

पीआईएमएस के चेयरमेन आशीष अग्रवाल ने बताया कि वर्चस्व-2017 एथेलेटिक्स 100 मीटर पुरुष वर्ग में देवेद्र कुमार प्रथम, महेश भाखर द्वितीय, 200 मीटर में महेश भाखर प्रथम, 400 मीटर में महेश भाखर प्रथम और मनीष सिंह तृतीय, आर्म रेसलिंग में अभिषेक जिंदल ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। इसी प्रकार टेबल टेनिस डबल्स में ईशा चौधरी एवं अदिति डांगी द्वितीय, ऐथेलेटिक्स 200 मीटर गर्ल्स में ईशा चौधरी तृतीय, 400 मीटर में मिनरोज तृतीय, डिस्क थ्रो में मुस्कान मेहलावत तृतीय, वेट लिफ्टिंग गर्ल्स में डिम्पल वाला प्रथम रहीं। गोल्डन बूट अरशद खान को मिला।

पीआईएमएस के डीन ब्रिगेडियर डॉ. के. के. शर्मा ने बताया कि इसके अलावा पीआईएमएस की टीम ने 4 गुणा 100 रिले में प्रथम, कब्बडी में द्वितीय, खो खो में द्वितीय, केरम सिंगल में प्रथम, केरम डबल्स मे द्वितीय, सितोलिया में द्वितीय, लूडो सिंगल में प्रथम, लूडो डबल्स में प्रथम, रस्साकसी में द्वितीय, मेराथन में द्वितीय एवं तृतीय, वेट लिफ्टिंग में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय, स्थान हासिल किया।

उदयपुर में सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास की ओर से 4 से 6 नवंबर को आयोजित सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव के महिला सम्मेलन में वैदिक विदुषी डॉ. गायत्री पंवार, ने कहा कि वेद का ओदश है मनुर्भव:। वेद में दिए गए आचार विचार, व्यवहार, संस्कार के ज्ञान से ही हम श्रेष्ठ मनुष्य बन सकते हैं।

जेल प्रशासन की डीआईजी डॉ. प्रीता भार्गव ने अपने ओजस्वी वक्तव्य में कहा कि पुरुष दो नजरिये रखता है। उसकी सोच अपनी मां, बहिन और पुत्री के लिए रक्षक की होती है जबकि अन्य महिलाओं के लिए अलग। स्त्री एवं पुरुष एक दूसरे के पूरक बनकर के परिवार और समाज के लिए सुख, शांति एवं समृद्धि ला सकते हैं। पूर्व आई.पी.एस. डॉ. आनन्द कुमार का कहना था कि महाभारत के बाद महर्षि देव दयानन्द सरस्वती पहले व्यक्ति थे जिन्होंने महिलाओं को पुरुष की बराबरी का दर्जा दिया।

डॉ. देव शर्मा ने 'नारी परिवार की धुरी' विषय पर बोलते हुए कहा कि नारी बुराइयों के सहस्रों महिषासुरों को मारने की शक्ति रखती है। रासासिंह रावत तथा स्वामी प्रणवानन्द ने विभिन्न रूपों में नारी को महिमा मंडित बताया। अध्यक्षीय उद्बोधन में साध्वी पुष्पा सरस्वती ने कहा कि नारी को शस्त्र और शास्त्र दोनों में पारंगत होकर आत्म विश्वास के साथ आगे बढ़ना चाहिए। महिला सम्मेलन का संचालन ललिता मेहरा ने किया।

अन्ध विश्वास निर्मूलन के सत्र में अध्यक्षीय उद्बोधन में ठाकुर विक्रमसिंह ने नई पीढ़ी को राजधर्म की भावना से प्रेरित करके राष्ट्र के उत्थान हेतु अग्रसर होने का आह्वान किया। डॉ. ज्वलन्तकुमार शास्त्री तथा अरूण अब्रोल ने महर्षि दयानन्द सरस्वती से प्रेरणा लेकर राष्ट्र एवं समाज कल्याण के लिए आगे आने का सुझाव दिया।

समापन समारोह में न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष अशोक आर्य ने सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को घर-घर में पहुंचाने में न्यास की भूमिका को रेखांकित किया। संयुक्त मंत्री डॉ. अमृतलाल तापड़िया ने आभार व्यक्त किया। सत्र का संचालन भूपेन्द्र शर्मा ने किया।

स्मृतियों के शिखर (40) : डॉ. महेन्द्र भानावत

बुंदेली लोक के प्रसाद डॉ. नर्मदाप्रसाद

छतरपुर (म. प्र.) के डॉ. नर्मदाप्रसाद गुप्त से मेरा परिचय लेखन को आधार लिये हुआ। मैं भारतीय लोककला मंडल से 'रंगायन' मासिक पत्र का सम्पादन करता जबकि गुप्तजी अपनी बुंदेलखंड साहित्य अकादमी से 'मामुलिया' का प्रकाशन करते। वे अपने द्वारा किये जा रहे लेखन की मुझे जानकारी दिये रहते और मेरे द्वारा किये जा रहे कार्यों के बारे में जानने की चेष्टा में रहते।

मुझे लेखन के लिए प्रोत्साहन देते। सुझाव देते और अपने सहयोग का आश्वासन देते। 'अभी थोड़ी व्यस्तता है। कुछ दिनों बाद जब आप संकेत करेंगे, निश्चित ही अच्छा शोधपूर्ण लेख भेजूंगा' लिखकर मुझे निश्चिंत करते तो कभी 'लोककला : पहचान और कसौटी' लेख बड़े परिश्रम से नवीन और शोधपूर्ण सामग्री युक्त है, पर क्या इतना बड़ा लेख प्रकाशित करेंगे?' लिखकर पहले से पूछताछ कर लेते। वे अपने लेखों के प्रकाशन की सूचना भी देते तो मेरे छपे लेख पढ़कर अपनी राय से भी अवगत करते।

ऐसे मेरे और उनके बीच पत्राचार का सम्बंध धीरे-धीरे गाढ़ा होता गया। हम एक-दूसरे के निकट आने लगे और लगा कि हमारे बीच पारिवारिकता के सूत्र गहरे होते जा रहे हैं। दूरी तो केवल स्थान की है। उनसे मेरा परिचय सातवें दशक के दौरान हुआ। विवाहोत्सव पर हमारा आपसी मैत्री-सौहार्द्र खिल आता। वे मुझे बुंदेली में निमंत्रण पत्र भेजते जबकि मैं मेवाड़ी में। उन्होंने बुंदेली लोकसाहित्य, लोककला एवं लोकसंस्कृति का तल-अतल खोजा और जो मोती साहित्य समाज और संस्कृति वेत्ताओं को दिये वे अनुपम और खोज के अमूल्य दस्तावेत हैं।

दीवाली पर शुभकामना तथा विवाहोत्सव के निमंत्रण के उत्तर वे प्राय: कविता में देते। मेरी भी यही स्थिति रही। मैं भी कभी हिन्दी में तो कभी मेवाड़ी में काव्य-पंक्तियां लिख भेजता। एक दीवाली (1994) पर उन्होंने पोस्टकार्ड में ये पंक्तियां लिख भेजीं-

मैंने पाले मोती-से रख
कवच बने नयनों के सीप।
अंधियारों के चक्रव्यूह को
तोड़ेंगे अभिमन्यू दीप।।

इससे पूर्व की दीवाली पर उन्होंने लाल रंग का एक दीपक ही बनाकर उसी में लिख भेजा- 'एक दिया मोरे देसा खों दै देव जगर-मगर हो जाय।' मेरी बड़ी पुत्री कविता के विवाह के निमंत्रण पर उन्होंने बुंदेली में यह लिख भेजा अपने 30 नवम्बर 1984 के पत्र में-

'जोग लिखी डॉ. महेन्द्र भानावत जू कों नर्मदा प्रसाद की राम-राम पौंचै। आपर अपुन को नेवतौ मिलो, हम सबई जनन खों भौतई खुसी भई। हमाओ आसीस बनी-बना खां-
जुग-जुग जियत रयै यै जौ जोरी, बनी किसोर-किसोरी।
दुनिया की कारिख धो डारै, दमकै सुहाग की रोरी।
सूखी-रूखी जा जिंदगानी, बन जावै रस बोरी।
कात 'प्रसाद' संवारें रइयौ, जा कविता सी भोरी।।'

-नर्मदाप्रसाद गुप्त

रंगायन मैं उन्हें नियमित भेजता पर वे मामुलिया नहीं भेज पाते कारण कि वह वे नियमित नहीं निकाल पाते लेकिन वे रंगायन का हर अंक नजरों से अवश्य निकालते और कभी-कभी समीक्षापरक टिप्पणी भी लिख दिया करते। अपने 18 फरवरी 1989 के पत्र में उन्होंने रंगायन के जनवरी-दिसंबर 1988 के अंक बाबत् लिखा- 'इतना सुन्दर अंक सम्पादित करने के लिए आपको बधाई। सामग्री स्तरीय है और सज्जा भी।

सुश्री मालती शर्मा का लेख 'बांस भी रहेगा, बांसुरी भी' बहुत उपयोगी बन पड़ा है। उन्हें बधाई देना चाहता हूं। उनका पता लिखें। सभी लेख किसी न किसी रूप में सार्थक हैं। ऐसे ही अंक निकालें, तो बात बने। ऐसा करें, कोई विशेष अंक आप निकालें तो मैं सहायता करूंगा और मैं निकालूं तो आप। सामाजिक संरचना में लोकसंस्कृति की भागीदारी पर एक संक्षिप्त टिप्पणी यथाशीघ्र लिखें, जो मामुलिया के विशेषांक में छपेगी। अवश्य लिखकर भेजें।'

लोकसंस्कृति, साहित्य कला पर प्रकाशित प्रत्येक पुस्तक वे अपने संग्रह में रखना चाहते थे। उन्होंने कलामंडल से प्रकाशित पुस्तकों के लिए भी लिखा कि वी.पी.पी. से भेज दें किन्तु वे पुस्तकें प्राप्त नहीं कर सके तब मुझे उन्होंने 25 अप्रेल 1994 के पत्र में लिखा-

'आपके निदेशक श्री भानु भारती विचित्र व्यापारी लगे। आपको ज्ञात है कि मैं कुछ पुस्तकें क्रय करना चाहता था। उन्होंने 7.12.1993 को पत्र लिखा कि आप द्वारा चाही गई दो पुस्तकें नहीं है, बदले में अन्य के नाम लिखें। मैंने तुरन्त उत्तर दे दिया। वे उसे डकार गये और 18.4 के पत्र में लिखा कि कीमतों में वृद्धि कर दी है। लोकवार्ता की पगडंडियों की 30 से 65 और राजस्थान की संझ्या की 5 से 25। गजब की वृद्धि है पांच गुनी। कहिये, तो मैं राजस्थान शासन को लिखूं। अब मैं उनसे पत्र संपर्क नहीं करूंगा। वे किसी विद्वान का सम्मान करना भी नहीं जानते। अपनी ही कथनी को बदल देते हैं।'

गुप्तजी से पहलीबार मेरा मिलना लखनऊ में वहां के हिन्दी संस्थान के एक सम्मान समारोह में हुआ। 14 सितम्बर 1989 को इस समारोह में देश के कई साहित्यकारों ने भाग लिया। मुझे इस समारोह में 'अजूबा राजस्थान' पुस्तक पर पं. रामनरेश त्रिपाठी नामित पुरस्कार प्रदान किया गया था।

दूसरी बार धर्मस्थल में आयोजित एक राष्ट्रीय संगोष्ठी में मेरी उनसे भेंट हुई। इस संगोष्ठी में गुप्तजी जोड़े से थे। संगोष्ठी के बाद हमने दक्षिण भारत के कुछ नामचीन धर्मस्थानों की यात्रा की। बैंगलोर, मैसूर और रामेश्वरम् तक का वह भ्रमण हमारा यादगार ही बन गया। इस यात्रा में मैंने उन्हें अपनी कृति 'निर्भय मीरां' भेंट की थी। छतरपुर जाकर 6 मार्च 1995 को उन्होंने मुझे अन्तर्देशीय पत्र लिखा-

प्रिय बंधु डॉ. भानावतजी,

'निर्भय मीरां वापसी यात्रा में ही पढ़ डाली थी। उसका एक-एक पृष्ठ खोजपूर्ण और कुछ-न-कुछ कहता हुआ लगा। उसमें मीरां के व्यक्तित्व के अब तक अदृश्य पहलू उजागर ही नहीं हुए वरन् एक विचित्र किन्तु वास्तविक चरित्र अपने पूरे सम्मान के साथ चित्रांकित हुआ है। थोड़े-थोड़े अन्तराल में मैं आश्चर्य से चकित होकर गहराई में छिपे रत्नों को तलाशता रहा और उस समय तो जड़ हो गया जब खोज की चरम सीमा पर मीरां रचनाधर्मिता से मुक्ति पा गई। मीरां की 'छाप' लगे पदों के रचनाकार तलाशने का मुद्दा भी एक विचित्र समस्या है। बहरहाल, इतनी अच्छी कृति के लिए बधाई स्वीकारें।'

यात्राकाल में हमने बैंगलोर से साड़ियां खरीदीं। गुप्तजी ने भी तीन साड़ियां खरीदीं। दुकानदार ने भरोसा दिलाया था कि साड़ियों में कोई मीन-मेख नहीं है अत: उसके विश्वास पर हमने किसी साड़ी को ठीक से खोलकर नहीं देखा पर गुप्तजी की तीन साड़ियों में से एक फटी-कटी निकल गई फलस्वरूप इसी पत्र में उन्होंने मुझे लिखा-

'आज ही मेरी पुत्री माधवी जी ने बैंगलोर से खरीदी साड़ी पहनने के लिए निकाली। एक लाल रंग की साड़ी कई जगह से कटी निकली। वहां से तीन साड़ियां खरीदी थीं और जब दिखाने के लिए कहा तो दुकानदार बोला था कि हम तो थोक में बेचते हैं और सब माल फ्रैश है। उसमें दो साड़ियां तो ठीक हैं, पर एक कटी-फटी-छिणी है। अतएव मैं उसे पार्सल से वापस करना चाहता हूं लेकिन मेरे पास न तो उन कवि बन्धु का पता है और न उनके दुकानदार मित्र का, जहां ज्यूस पिया था और जिसने उन साड़ियों की दुकान में भेजा था। दुकानदार ने रसीद भी नहीं दी थी, केवल विश्वास के बल पर सब हो गया था। अतएव आप उन कविराज और उस दुकानदार का पता लिखने का कष्ट करें। वह साड़ी बिल्कुल पहनने के काबिल नहीं है।'

ये कविबन्धु माधव दरक थे। उदयपुर से मैं, माधव दरक और डॉ. पुरुषोत्तम मेनारिया थे। तीनों यहां के पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र द्वारा धर्मस्थल की संगोष्ठी में भाग लेने पहुंचे थे। हम तीनों ने वहां पत्रवाचन किया और गुप्तजी के साथ यात्रा भी की। मैंने उत्तर में गुप्तजी को माधव दरक तथा उनके मित्र शांतिलाल मूथा का पता लिख भेजा।

गुप्तजी से अंतिम बार मेरी भेंट वृन्दावन में हुई जहां ब्रजकला केन्द्र मथुरा के रामनारायणजी अग्रवाल ने ब्रज लोककला संगोष्ठी में उन्हें और मुझे भी आमंत्रित किया था। इस संगोष्ठी में पूना से मालती शर्मा और भोपाल से डॉ. कपिल तिवारी एवं बसंत निरगुणे भी थे। यह संगोष्ठी त्रिदिवसीय थी, 23 से 25 फरवरी 2001 को।

- शेष पृष्ठ सात पर

खोज-खबर

राजस्थानी में बिहारी सतसई

कविराव मोहनसिंह मेवाड़ महाराणा भूपालसिंहजी के दरबारी कवि रहे। राजस्थान विद्यापीठ के साहित्य संस्थान में भी मेरा उनसे निरन्तर मिलना होता रहा। इस संस्थान में मैंने भी अपनी सेवाएं (1964-67) दीं।

कविरावजी के घर पर भी कईबार मिलना होता रहा। उनके व्यक्तित्व-कृतित्व पर विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में भी बहुत लिखा और 'भारतीय साहित्य रा निरमाता' सिरीज के अन्तर्गत कविराव मोहनसिंह नामक एक पुस्तक भी राजस्थानी में लिखी जिसका प्रकाशन 2002 में साहित्य अकादमी, नई दिल्ली से हुआ। कविरावजी से जब-जब भी भेंट हुई वह यादगार ही बनी। एकबार उन्होंने मुझे बिहारी सतसई के 14 दोहों का राजस्थानी में किया अनुवाद दिया जिसे मूल सहित यहां प्रकाशित किया जा रहा है-

(1)

मेरी भव बाधा हरो, राधा नागरि सोय।
जा तन की झांई परे, श्याम हरि तदुति होय।।
सुहड़ी राधा माहरी, भो बाधा हरजेह।
झलक पड़्यां थां, श्यामरी दुतहरियोड़ी- हे ह।।

(2)

जुवति जोन्ह में मिल गई, नेक न होति लखाई।
सोंधे के डोरे लगी, अली चळी संग जाई।।
मिली चांदणे भामिणी, नहं पिछाल में आय।
खुशबू धोरे खोजती, साथण साथ सिधाय।।

(3)

चितई ललचोहे चखनि, डरि घूंघट पर मांह।
छल सूं चली छुवाय के, छिनक छबीली छांह।।
लख ललचाण लोयणां, डट पट घूंघटड़ेह।
छळ सूं छू चाली छिणक, छांह छबीळी देह।।

(4)

कीनेहू कोटिक जतन, अब कहु काढ़े कौन।
मो मन मोहन रूप मिलि, पानी में को लौना।।
कोड़ जतन कीधा हमे, कहो निकाले कूण।
मन व्हो मोहन रूप धुल, पाणी मेंलो लूण।।

(5)

बेधत अनियारे नयन, बेघत कर न निषेध।
बर बर बेधत मोहियो, तो नाशा को बेध।।
अणियाळा भेदे नयण, की अचरज यांरोह।
नाक छेद छेदे हियो, मांढ़्यां ही म्हांरोह।।

(6)

कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात।
भरे भौन में करत है, नैनन ही सों बात।।
कहे, नटे, रीझे, खिझे, मिळ, हुळसे, शटजाय।
भामण भरियोड़े भवन, नैणां में बतळाय।।

(7)

नेह न नैनन को कछू, उपजी बड़ी बलाइ।
नीर भरे नित प्रति रहे,तऊ न प्यास बुझाइ ।।
नैणां लग्यो न नेहड़ो, उपजी बळाज कोय।
तोय भर्योड़ा नित रहे, तिरसा बुझे न तोय।।

(8)

पिय तियसों हंसिके कह्यो, लखें ट्ठिो ना दीन्ह।
चन्दमुखी मुख चन्दतें, भलो, चन्द सम कीन्ह।।
दीध दिठोणो निरख पी, तीसूं हंस कहियोह।
चंदरमुखी मुख चंदरमा, सागे चांद कियोह।।

(9)

साजे मोहन मोह को, मोहीं करत कुचेन।
कहा करों उलटे परे, टोने लोने नैन।।
मोहन मोहण म्हें सज्या, मोहि लग्या दुख देण।
ई टोणा उळटा पड़्या, निपट सळोणां नैण।।

(10)

कहा भयो जो बीछुरे, मो मन तो मन साथ।
उड़ी जाहु कितहू तऊ, गुडी उडायक हाथ।।
कांई हुवो धव बीछुड़्या, मनड़ो मनड़ा साथ।
अठी उठी क्यूं नीं उड़े, पतंग पतंगी हाथ।।

(11)

कागद पर लिखत न बनत, कहत संदेश लजात।
कहि है सब तेरो हियो, मेरे हिय की बात।।
कागळ पै लखबो कठण, कहतां आवे लाज।
मनड़ारी सब भाखसी, मन थांरो महाराज।।

(12)

वर जीते सर मैन के, ऐसे देखे मैं न।
हरनी के नैनांन ते, हरि नीके ये नैन।।
जीत्या शायक मैंण रा, हेर्‌या नको हमेण।
हरिजी हरणा नैण सूं, नीका हरणा नैण।।

(13)

पत्ता ही तिथि पाइयत, पा घरके चहुं पास।
नित प्रति पून्यो ही रहे, आनन ओप उजास।।
पतड़ां मिलवे मत्तड़ी, उण झूंपड़ले बाट।
पूज्यूं रातड़-दीहड़े, मुखड़ा रे भर ळाट।।

(14)

नेक हंसोटी बानि ताजि, लख्यो परत मुख नीठि।
चौका चमकनि चौंधतें, परति चौंधिसी दीठि।।
बाण हंसण छोड़ो चनी, दीखे मुखड़ो नीठ।
चौकां री घण चमक सूं, मिच-मिच जावे दीठ ।।

किसानों की खुशहाली के लिए ग्राम उदयपुर का आयोजन

उदयपुर। मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे ने कहा कि किसान राजस्थान के विकास का पार्टनर है। जब तक वह मजबूत नहीं होगा तब तक प्रदेश आगे नहीं बढ़ सकेगा इसीलिए किसानों एवं पशुपालकों को समृद्ध और सम्पन्न बनाने के लक्ष्य को लेकर हमारी सरकार ग्लोबल राजस्थान एग्रीटेक मीट-2017 के आयोजन कर रही है। 'ग्राम-उदयपुर' में शामिल होकर संभाग के किसान कृषि, एग्रो-प्रोसेसिंग, पशुपालन, मत्स्य पालन, जैविक कृषि एवं डेयरी के क्षेत्र में नवाचार और नई तकनीक को सीखकर तरक्की का नया अध्याय लिखेंगे।

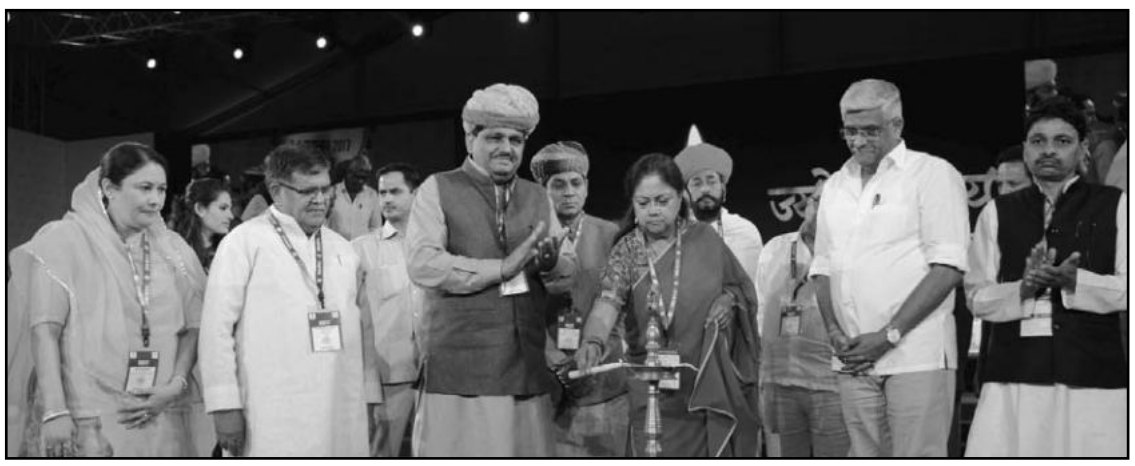

श्रीमती राजे प्रदेश के तीसरे ग्लोबल राजस्थान एग्रीटेक मीट के उद्घाटन समारोह को संबोधित कर रही थीं। उन्होंने कहा कि ग्राम का आयोजन प्रदेश के किसानों की आय बढ़ाकर उनकी जिंदगी बदल रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि जनजातीय समुदाय की मांग को देखते हुए हमने तेंदू, रतनजोत बीज, पुआड़, आंवला, महुआ, महुआ बीज सहित 26 वन उपजों को ट्रांजिट परमिट से मुक्त कराया है। पहली बार प्रदेश में चार फसलों मूंग, उड़द, मूंगफली और सोयाबीन की समर्थन मूल्य पर एक साथ खरीद की जा रही है। किसानों की सुविधा के लिए इस बार प्रदेश में 52 खरीद केन्द्र बढ़ाए गये हैं।

सरकार ने पिछले साढ़े तीन वर्षों में करीब 57 हजार करोड़ रुपये का ब्याज मुक्त फसली ऋण दिया है। किसानों का व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा योजना के तहत बीमा लाभ 50 हजार से बढ़ाकर 6 लाख रुपये कर दिया है। वित्तीय वर्ष में इसे 10 लाख रुपये किया जाएगा। 25 लाख किसानों को इस बीमा योजना से जोड़ा जाएगा। प्रदेश में डेयरी उद्योग को नई ऊंचाइयां प्रदान करने एवं मिल्क यूनियनों को सशक्त बनाने के लिए राज्य में 100 करोड़ रुपये का फण्ड बनाया जा रहा है। इससे 9 लाख दुग्ध उत्पादकों को सीधा लाभ मिलेगा।

केन्द्रीय कृषि राज्यमंत्री गजेन्द्रसिंह शेखावत ने किसानों की आय वर्ष 2022 तक दोगुनी करने के लिए मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे के प्रयासों की सराहना की।

गृहमंत्री गुलाबचन्द कटारिया ने मेवाड़ के किसानों को बराबरी और सम्मान से जीने का अवसर प्रदान करने के लिए मुख्यमंत्री के प्रयास को प्रशंसनीय बताया। उदयपुर में लघु वन उपज मण्डी शुरू की गई है, जिसमें 120 करोड़ रूपये का व्यापार हुआ है।

कृषि मंत्री प्रभुलाल सैनी ने कहा कि राजस्थान कृषि क्षेत्र में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर अपनी प्रभावी उपस्थिति दर्ज करा रहा है। विश्व की पहली जैतून की प्रोसेस्ड चाय का उत्पादन राजस्थान में शुरू हो गया है। परम्परागत फसलों के साथ जैतून, खजूर, ड्रेगन फ्रूट, किनोवा जैसी गैर परम्परागत फसलों को बढ़ावा दिया जा रहा है।

इस अवसर पर फिक्की के सेक्रेटरी जनरल डॉ. संजय बारू, शिक्षामंत्री श्रीमती किरण माहेश्वरी, गोपालन मंत्री अजयसिंह किलक, खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री बाबूलाल वर्मा, राजस्व मंत्री अमराराम, गोपालन राज्यमंत्री ओटाराम देवासी, ग्रामीण विकास एवं पंचायतीराज राज्य मंत्री धनसिंह रावत, पीएचईडी एवं भू-जल राज्य मंत्री सुशील कटारा, सांसद मानशंकर निनामा, अर्जुनलाल मीणा, संसदीय सचिव भीमा भाई सहित अन्य जनप्रतिनिधि, अधिकारी, अन्तरराष्ट्रीय अतिथि, उद्योगपति, औद्योगिक प्रतिनिधि एवं उदयपुर संभाग से बड़ी संख्या में आये किसान एवं पशुपालक उपस्थित थे।

समापन समारोह में केन्द्रीय जल संसाधन एवं गंगा पुनरोद्धार राज्य मंत्री अर्जुनराम मेघवाल ने कहा कि प्रधानमंत्री का सपना है कि बीज से लेकर बाजार तक हो रहे तकनीकी विकास एवं नवाचारों का लाभ किसानों को सीधा-सीधा मिले ताकि किसानों की आमदनी वर्ष 2020 तक दोगुनी हो। उन्होंने कहा कि सरकार जीडीपी में कृषि का योगदान 16 से बढ़ाकर 18 प्रतिशत तक कर दिया है। किसान अपनी आय को बढ़ाने के लिए उद्यानिकी एवं वाणिज्यिक फसलों के उत्पादन पर जोर दें।

विधि एवं न्याय राज्यमंत्री पी.पी.पी.चौधरी ने

कहा कि कृषि में गुणवत्तापूर्ण उत्पादन एवं प्रबंधन की आवश्यकता है। पहली बार बजट में 10 लाख करोड़ रुपयों का प्रावधान कृषि ऋण के लिए किया गया है।

पहली बार नीम कोटेड यूरिया की व्यवस्था की है। पशुपालन मंत्री प्रभुलाल सैनी ने कहा कि हाईड्रोफोनिक, ग्रीन हाउस, पॉली हाउस, उन्नत पशुपालन करके किसान अपनी आय में वृद्धि कर सकते हैं। 12 प्रकार की फसलों के उत्पादन में राजस्थान देश में अग्रणी है। उन्होंने सुझाव दिया कि उदयपुर संभाग में 92 प्रतिशत किसान लघु एवं सीमांत श्रेणी के हैं, इसलिए उन्हें परंपरागत खेती की बजाय समंवित खेती करनी चाहिए। 12 प्रकार के कैंसर और कई प्रकार के रोगों के निदान में उपयोगी जैतून के उत्पादन में राजस्थान अग्रणी राज्य बन चुका है।

शिक्षामंत्री श्रीमती किरण माहेश्वरी ने कहा कि ग्राम उदयपुर के दौरान 415 करोड़ की योजनाओं के शिलान्यास व लोकार्पण के माध्यम से क्षेत्रवासियों को विकास की सौगात प्राप्त हुई है वहीं ग्राम में 488 करोड़ के एमओयू किए गए जिससे इस क्षेत्र के किसानों को आने वाले समय में अपनी फसलों का पूरा-पूरा लाभ मिलेगा।

उन्होंने सुझाव दिया कि गांवों में समन्वित कृषि के विकास, जैविक खेती के विकास तथा स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से हाईब्रिड बीज के उत्पादन और मार्केटिंग को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। सांसद अर्जुनलाल मीणा ने कहा कि इस आयोजन से इस संभाग के हजारों किसानों को बड़ा लाभ प्राप्त होगा।

समारोह दौरान कृषि मंत्री प्रभुलाल सैनी ने घोषणा की कि उदयपुर संभाग में बनने वाले मक्का के सेंटर ऑफ एक्सीलेंस के लिए दस करोड़ रुपये दिए जाएंगे। 160 करोड़ रुपयों की लागत से मण्डियों के विस्तार का कार्य किया जाएगा।

बलिचा, बाघपुरा, कोटड़ा, लसाड़िया की मण्डियों को विकसित किया जाएगा। समारोह में जैविक खेती के लिए एक-एक लाख रुपये के तीन राज्य स्तरीय पुरस्कार भी प्रदान किए गए। समारोह में दूरदर्शन केन्द्र जयपुर के कृषि दर्शन कार्यक्रम के निर्माता वीरेन्द्र परिहार को गत बारह वर्षों से कृषि कार्यक्रम एवं नवाचारी किसानों व पशुपालकों की सफलता की कहानियों के प्रसारण व कृषि संबंधित गतिविधियों के प्रचार-प्रसार के कार्य के लिए सम्मानित किया गया।

शब्द रंजन

उदयपुर, बुधवार 15 नवम्बर 2017

सम्पादकीय

जीएसटी यानी गड़बड सड़बड़ टेक्स

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का काल कई दृष्टियों, कई रूपों, कई हलचलों और हिलोरों के रूप में इतिहास उल्लेखित होगा। न केवल हमारे देश में अपितु पूरे विश्व में एक विशिष्ट दौर-दौरे पैदाकर भारत को विश्व-मानचित्र में उल्लेखनीय बनाया और देश-देशान्तर की आम जनता को मजेदार मोहब्बत देकर भाईचारा कमाया। यह कमाई ऐसी नहीं कि जादू की तरह हवा से कोई डंडा घुमाकर मुर्गी पैदा कर दे। आम का फलदार वृक्ष बनाये। मनचाहे पकवानों की वर्षा कर दे और आपका चकित चौंधिया बना दे।

जीएसटी प्रारम्भ करने पर मोदी राज में सर्वाधिक हल्लागुल्लाजनित खुसर-फुसर हुई। आम जनता भी बड़े बुरे ढंग से त्रस्त हुई। लोगों को ठीक ढंग से अब तक जैसे भी जीते आ रहे थे, उस सामान्य तौर पर जीवन-यापन के भी फोड़े पड़े। कइयों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा। बड़े ओहदे पर आसीन जो भी व्यक्ति होता है उसकी निगाह ठेठ नीचे तक नहीं पहुंच पाती। जैसे हिमालय की ऊंची-उन्नत चोटी ठेठ नीचे जमीन से दुबकी दूब को नहीं देख सकती, सहला नहीं सकती।

लेकिन लगता है, मोदी ने अपनी आंखों के अलावा और कई आंखें लगा रखी हैं जो समय-बेसमय उनका उपयोग करते हैं और बारीकी से गिद्धदृष्टि किये सूक्ष्मतर देख लेते हैं। उन्हें जीएसटी के लिए भी यही लगा कि कहीं-न-कहीं घोड़ी की पीठ पर कंकरी का निशान लग गया है जो दिखाई तो नहीं दे रहा है पर घोड़ी को बेचैन किये दे रहा है।

यह भी अजीब तथ्य ही सामने आया कि जीएसटी यानी गड़बड़ सड़बड़ टेक्स के रूप में जनता के माथे पर जो टेक्स-टोकरा गिरा उससे वह बड़ी आहत तो हुई है पर उसे गलत नहीं मान रही है। ऐसा जब-तब जनता की राय जानने को सर्वे हुआ उसके तथ्य मुंह बोल रहे हैं।

शब्द रंजन के एक प्रबुद्ध पाठक ने लिखा भी कि यह स्थिति ठीक वैसी ही बनी है जैसी किसी महिला को प्रसव पीड़ा के दौरान भुगतनी पड़ती है। तब उसकी स्थिति बड़ी पीड़ादायक होती है मगर घृणादायक नहीं। मातृत्व के निखार के लिए वह इस पीड़ा को बिना किसी शिकायत शकवे के सहन कर लेती है।

जनता ने भी यही कुछ कहा कि मुसीबतें तो अम्बार बनीं पर भविष्य के लिए यह कदम ठीक ही उठाया गया है। सच भी है, कोई भी नई चीज प्रारम्भ करने के लिए शुरू-शुरू में कई तरह की मुसीबतें झेलनी पड़ती हैं लेकिन आगे जाकर उनका सुखद परिणाम ही होता है।

धीरे-धीरे टेक्स का बोझा कम होता जा रहा है। जनता जीएसटी के बेशुमार फायदे भी गिना रही है। बिचौलियों से जो तिसना झेलनी पड़ रही थी वह समाप्त हो गई है। टेक्स चोरी-चपाटी करने वाले ठिकाने लगे हैं और धीरे-धीरे वे भी मूंछ के बाल सीधे कर कहने को आतुर हैं कि हम भी टेक्स देते हैं और देश के विकास की धारा के सहारे बने हैं।

अच्छी बात है, जनता तो सजग हो गई है पर शासन-प्रशासन के लोग भी हिलने लगे हैं। उनकी ढिलाई भी चौकन्नी बनने लगी है। यों जिस जनता को केवल वोट प्राप्त करते समय ही लोग ठीक-अठीक समझते हैं वह जनता भी बड़े लोगों की तरह समय-समय पर अपने मुखौटे, अपनी नियत के अनुसार बदलती रहती है। देश चलाने वाले यह न समझें कि वे अपनी समझदारी के बूते देश चला रहे हैं। यह लोकतंत्र है। असली लगाम या चाबुक जनता के पास है। वह जब चाहे तब किसी को रोड़ी बना सकती है और किसी को रतन।

वोडाफोन ने पेश किया छोटा चैम्पियन

उदयपुर। वोडाफोन इण्डिया ने अब तक के सबसे किफ़ायती इंटेग्रेटेड वॉइस एवं डेटा पैक वोडाफोन छोटा चैम्पियन लॉन्च किया है। मात्र 38 रुपये की कीमत पर पेश किया गया यह किफ़ायती पैक प्रीपेड उपभोक्ताओं के लिए लेकर आया है 100 मिनट लोकल एवं एसटीडी कॉलिंग और 28 दिनों के लिए 100 एमबी 3जी-4जी डेटा बिल्कुल मुफ्त।

वोडाफोन इण्डिया में कन्ज़्यूमर बिजनेस के एसोसिएट डायरेक्टर अवनीश खोसला ने कहा कि वोडाफोन हमेशा से अपने उपभोक्ताओं के लिए आधुनिक एवं पैसा वसूल सेवाएं लाता रहा है। वोडाफोन छोटा चैम्पियन पैक इसी दिशा में हमारा एक और प्रयास है। अपनी तरह की यह पहली पेशकश उपभोक्ताओं को बेहद किफ़ायती दरों पर पूरे महीने अपने प्रियजनों के साथ जोड़े रखेगी। इतना ही नहीं इसके साथ उन्हें 100 एमबी डेटा भी मिलेगा। हमें उम्मीद है कि हमारा यह पैक बड़ी संख्या में उपभोक्ताओं को इंटरनेट के साथ जुड़ने में मदद करेगा।

डॉ. कहानी हिन्दी ग्रंथ अकादमी से सम्मानित

राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी द्वारा आयोजित लेखक समारोह में डॉ. कहानी भानावत को उच्च शिक्षामंत्री श्रीमती किरण माहेश्वरी तथा कोटा विश्वविद्यालय के उपकुलपति डॉ. परमेन्द्र दशोरा ने अभिनंदन पत्र, शॉल तथा स्मृतिचिन्ह देकर सम्मानित किया। डॉ. कहानी भानावत को यह सम्मान अकादमी द्वारा उनकी पुस्तक 'राजस्थान की सांझी कला' के प्रकाशन पर दिया गया। मीरां कला महाविद्यालय में 7 नवम्बर को आयोजित समारोह में अकादमी निदेशक अनिता नायर ने कहा कि सन् 1989 से राज्य में ग्रंथ अकादमी सक्रिय है जो उच्च शिक्षा क्षेत्र में विज्ञान कृषि मानविकी एवं तकनीकी शिक्षा से सम्बंधित सरल समर्पित ज्ञान को जिज्ञासुओं तक पहुंचाने का कार्य कर ज्ञान से शब्द, शब्द से वाक्य और वाक्य से पुस्तक को आकार देकर सिद्धहस्त रचनाकारों की ज्ञानमाला बढ़ाती रही है।

बिछुए महाराष्ट्र के

- डॉ मालती शर्मा -

आज छाया अपने निर्धारित समय से काफी देर से आयी। कारण पूछने पर उसे कहा-पैर में चोट लग गई। मैंने छाया के पैरों पर निगाह डाली तो उसके पैरों की दोनों बीच की उंगलियों में बिछुओं की जगह दो गोल-गोल छल्ले देख मेरी कौतूहलपूर्ण जिज्ञासा जाग उठी। ये दो गोल छल्ले ही महाराष्ट्र के बिछिया हैं जिन्हें यहो 'जोड़वे' कहते हैं।

कहीं से कांसा के, कहीं चांदी के तो कहीं सोने के बने होते हैं। उत्तरप्रदेश में बीछिया, बिहार में बिछिया, मध्यप्रदेश में बिछुए, राजस्थान में बीछोड़ी और महाराष्ट्र में जोड़वे' के नाम से सुहाग चिन्ह में पहनावे का सर्वमान्य रिवाज है।

प्राचीन काल में छोटी उम्र में विवाह होते थे तब बिछिया ब्याह पर नहीं गौने पर पहनाए जाते थे। अंगूठे में पहनाए जाते गहने को 'बनवट' और छोटी उंगली के बिछिया को 'नहिंयां' कहा जाता है। लोकगीतों में इनके उल्लेख आते हैं। प्रश्न है कि स्त्री के अंगों पर सजने वाले आभूषणों में बिछुए तथा गले में पहनाये जाने वाला आभूषण मंगलसूत्र ही सौभाग्य चिन्ह क्यों? दक्षिण भारत में नाक के दोनों ओर पहनी जाती बड़ी लौंग, नलवी भी सौभग्यचिन्ह है। यू. पी. में यह नाक में एक ही तरफ पहनी जाती है। इसे सेंठा कहते हैं। गांवों में अभी भी कुछ बुढ़ियाएं इसे पहने दिख जयेंगी। उत्तरप्रदेश, बिहार तथा पहाड़ी अंचलों में नथ, नथनी भी सौभाग्य चिन्ह हैं।

इसका कारण पैरों की गति से जुड़ा है। इस धरती पर व्यक्ति तभी तक जीवन्त है जब वह पैरों पर खड़ा और चल रहा है। मरने के बाद भी उसके इस धरती पर आने, होने, रहने के प्रतीक भी पैर हैं, चरण चिन्ह हैं। संत, महात्माओं, महापुरूषों, देवताओं की सदेह उपस्थिति के प्रतीक भी पैर हैं। रामराज्य का प्रतीक भरत की चित्रकूट से लाई, राम की चरण पादुका ही सिंहासन की शोभा बनीं। वधू के गले में पहनाये जाजाने वाले मंगलसूत्र की रचना महाराष्ट्र, गुजरात और दक्षिण भारत में भिन्न होती है।

पांव और गले के दोनों सुहाग चिन्ह सृष्टि के युग्मराग की वीणा हैं। विवाह मंडप से स्त्री-पुरूष के मिलन से प्रारंभ दाम्पत्य जीवन में गति में सूचक मोती, मूंगा, धागा, सोने की चेन आदि के बीच में सोने की दो वाटी (कटोरी) होती हैं जिन्हें 'डोरले' कहते हैं। पैरों की उंगली के जोड़वे दो चांदी के छल्ले होते हैं। प्रकृति और पुरूष के प्रतीक सीधे वर-वधू विवाह मंडप में, गले में मंगलसूत्र और पैरों में जोड़वे हृदय, मन और पैरों की क्रियाशीलता के परिचालक हैं। पति से लड़ाई-झगड़े में स्त्रियां क्रोध में मंगलसूत्र ओर जोड़वे उतार फेंकती देखी गई हैं।

महाराष्ट्र के अधिकांश भाग में चाँदी के जोड़व, ससुराल के होते हैं और इन्हें वधू की उंगलियो में ननद या बुआ पहनाती है। केतकी ने तो यह भी बताया कि उनके समाज में विवाह मंडप में एक ही छल्ला पहनाया जाता है। वापस मायके आने पर सास दूसरा छल्ला बहू को पहना कर भेजती है।

पति की मृत्यु होने पर स्त्री मंगलसूत्र और जोड़वे नहीं पहनती। उत्तरप्रदेश और मध्यप्रदेश में वधू को विवाह मंडप में बिछिया पहनाने की प्रक्रिया मोहक अर्थपूर्ण है। देश के तीन चौथाई भाग में बिछिया ननिहाल से आते, मामा के होते हैं। भांवरों से पहले वूध की ससुराल से सुहाग पिटारी जिसे 'फूल छवरिया' कहते हैं आती है। उसमें वधू की चुनरी चादर पायल और सिन्दूर की डिब्बी, 'ईंगुन' रहते हैं। वधू को पहनाये जाते बताशे के आकार के बताशे बिछिया दोनों पैरों की तीन उंगलियों में तीन-तीन की संख्या लिये होते हैं। ये कांसे के बने होते हैं। नाइन वधू के एड़ी पर पूरा महावर लगाती है। ये बिछिया बुआ, बड़ी बहन या मामी-भाभी पहनाती हैं। ससुराल से वापस आने पर वधू चांदी के बिछिया पहनकर आती है। विवाह के बाद, तीन दो एक या एक भी बिछिया पहनना न पहनना, मनमर्जी पर है।

जोड़वे बिछुओं के साथ बहुत से विधि निषेध और आर्वजनाएँ जुड़ी हैं। ननद, भांजी, जेठौत को पर्व-त्योहार पर बिछुए दान में, विवाह में और उपहार में भी दिये जाते हैं। करवा चौथ तथा परिवार में किसी पुरूष की मृत्यु होने पर भी बिछिया बदलना जरूरी है। कुछ परिवारों में बिछुए किसी के दिए ही पहने जाते हैं। महावर पायल और बिछुओं से सजे पैर सुन्दर लगते हैं। बिछुओं की झंकार प्रिय और मिलन की चोरी बताती है। आयुर्वेद की दृष्टि से इन्हें पहनना स्त्री के लिये स्वास्थ्यप्रद और बीमारियों से बचाव है। अंगूठे में अनवट न हों तो अंगूठे में डोरा बांधा जाता है। पैर के बीच की उंगली में बिछुआ पहना स्त्री के व्यवहार के दोनों पक्षों को साधता, उत्तेजना को नियंत्रित करता तथा उसके व्यवहार को संतुलित रखता है।

हृदय और पैरों की गति के सम्मिलन के प्रतीक ये सुहाग चिन्ह पति की मृत्यु पर उसकी अर्थी पर रख दिये जाते हैं। विधवाएं कांच की चूड़ी और बिछिया जोड़वे नहीं पहनतीं पर अब यह वर्जना कम हो रही है। फैशन में क्वारी लड़कियां भी बिछुए पहने दीख पड़ती हैं। कुछ लोगों में देवर, बेटों, पोतों के नाम पर बिछुए नहीं उतारे जाते। देवर, बेटे, पोते होने पर बिछिया रखने का तात्पर्य स्त्री को पति से मिलती सामाजिक सुरक्षा है जो पति की मृत्यु के बाद उसे देवर बेटों पोतों से मिलती है।

पोथीखाना

'तुम्हारे नाम' : मनुष्य जीवन से जुड़ी यथार्थ कविताएं

– डॉ. लक्ष्मीनारायण नंदवाना –

रचनाकार क्यों लिखता है? रचना के उद्देश्य तथा लेखक की रचनाधार्मिता को लेकर बहस होती रही है। श्री विनाबा भावे को लेकर कहा जाता है कि वे स्वान्त: सुखाय के लिए रचना करते थे। कविता लिखी, पढ़ी, प्रसन्न हुए, ताली बजाई और उस रचना को नष्ट कर देते थे।

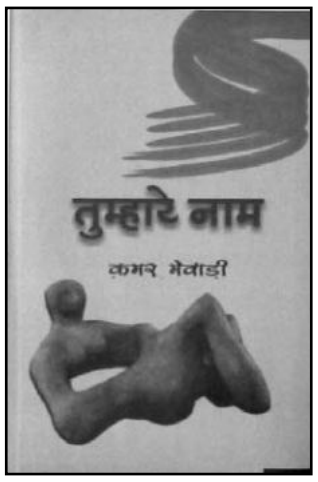

कागज को फाड़ देते थे। तुलसी स्वान्त: सुखाय की बात करते थे परन्तु एक मत यह भी है कि रचना समाज के लिए लिखी जाती है। लेखक समाज का हिस्सा है। समाज का दुख-सुख उसका अपना भी है और उस दुख-सुख, हर्ष-विषाद को वह अपनी रचना में अपनी रचना-प्रक्रिया से अभिव्यक्त करता है। वह सिर्फ अभिव्यक्त ही नहीं करता, समाज को प्रेरित करता है, जंजाल से मुक्ति हेतु। वह निराशा की जगह आशा का संदेश देता है। नई सुबह की बात करता है।

प्रबुद्ध रचनाकार कमर मेवाड़ी का सृजन-कर्म समाज-सापेक्ष है। वे अपनी रचनाओं में निरंतर बेहतरी को लेकर चिन्तित दिखाई देते हैं। समाज को खंडित करने वाली विपरित परिस्थियों से वे संघर्ष करते हैं। वे कविता को अपने ड्राईंगरूम या वैयक्तिक उपयोग की वस्तु नहीं समझते। उन्होंने अपनी अनुभूतियों को गंभीरता से अभिव्यक्त किया है। उनकी सद्य प्रकाशित काव्य-कृति 'तुम्हारे नाम' इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है।

कमर मेवाड़ी की इस कृति को पढ़ने पर लक्षित होता है कि कवि ने कविताओं में आज के जीवन की क्रूरताओं, विद्रूपताओं, संत्रासों, कुंठाओं तथा राजनीतिक एवं आर्थिक भ्रष्टाचार को वाणी दी है। इस संग्रह में कुल 116 कविताएं हैं। कवि की दृष्टि हमारे जीवन में होने वाले सूक्ष्म परिवर्तनों पर है जिसमें वैश्वीकरण, उदारीकरण, बाजारवाद, उपभोक्तावाद से अकेलापन बढ़ने और आदर्श के नये मापदंड स्थापित हो रहे हैं। ऐसे में पुरानी लकीरों को मिटाकर नये विचारों को स्थापित करने की आवश्यकता है–

भुला दो / समस्त संसार की बीती बातों को
लोगों के भरमाये में मत आओ
ढहा दो / आदर्शों के सभी स्तम्भ / और मिटाओ
पुरानी लीक की टेक को
खड़ी करो / नये विचारों की नई दीवार
जिस पर तुम / वर्तमान का महल निर्माण करने
जा रहे हो

अकेलापन और हम सब की बात करते हुए कवि इस कठिन दौर से दुखी है। संज्ञा शून्य हो रहे समाज से दुखी है–

पूरी की पूरी पीढ़ी / सलीव पर लटकी हुई है....
आन्दोलन करती दीवारें / हरहरा कर गिरने को है
संज्ञा शून्य हो गया है सूर्य / और हम सब
अकेलापन महसूस कर रहे हैं।

आज युद्ध उन्माद, रंग भेद आदि के फलस्वरूप पूरी दुनिया धधक रही है। हिंसा-प्रतिहिंसा की आग पागलपन के साथ फैल रही है। मनुष्य आतंक और हिंसा से दुखी है। इतना अधिक अत्याचार न हो कि जनता दुखी होकर खूनी को जमीन में दफन कर देगी। 'कुछ और भी' कविता को देखिये–

इस देश के कोने-कोने में फैला दी है युद्ध की आग
शहर का प्रत्येक घर, बाजार और चौराहा
तुम्हारे पागलपन की भेंट चढ़ चुका है....
और इस क्रूरतम शताब्दी का उत्तरार्द्ध
हजारों बेगुनाह लोगों के एकमात्र खूनी को
जिन्दा ही जमीन में न दफना दे।

कवि का मानवता के लिए संघर्ष है। गरीब, शोषित, वंचित वर्ग के लिए एक कवि का बिगुल-वादन है। कवि स्पष्ट कहता है –

कविता हथियार भी है
मैं भी अभी तक यही मानता था
कविता हथियार नहीं होती
पर उस दिन
जब वे लोग तिलमिला उठे
और मेरी कविता को करने लगे लहुलूहान
तब मैंने समझा
कविता हथियार का काम भी कर सकती है।

मेवाड़ी की कविता संघर्ष की कविता है। ये कविताएं आशावादिता का संदेश भी देती हैं। नई सुबह की प्रतीक्षा करने को कहती हैं। कल के लिए हम खुशी का इन्तजार करें। वर्तमान कैसा भी है, भविष्य सुखद है।

तुम्हारे नाम पुस्तक नीरज बुक सेन्टर, आर्यनगर सोसायटी, प्लॉट नं. 91, आईपीएक्स, दिल्ली-2 से प्रकाशित है। 200 पृष्ठीय इस पुस्तक का मूल्य 400 रूपये है।

अपने समय का सच : 'हमारे समय की श्रेष्ठ बाल कथाएं'

किसी समय से बात करना एक साहसपूर्ण चुनौती है और इस चुनौती को साहित्यकार स्वीकार करता है बशर्त है कि उसका व्यापक फलक हो। डॉ. विमला भंडारी अद्वितीय बाल साहित्यकार के साथ-साथ प्रयोगधर्मी रचनाकार हैं। उनकी यह प्रयोगधर्मिता उन्हें विशेष साहित्यकारों में खड़ा करती है। उसी प्रयोगधर्मिता का प्रतिफल है यह कृति 'हमारे समय की श्रेष्ठ बाल कथाएं' जिसका कुशल सम्पादन डॉ. विमला भंडारी द्वारा किया गया है।

संकलन का कथा जगत वैविध्य लिए है, जिसमें प्रादेशिक बोलियों और भाषाओं का अक्स दिखाई देता है। विविध प्रदेशों के साहित्यकारों का भाषा जगत, उनका शिल्प वैशिष्ट्य, उनका अपना अनुभव, बाल मनोविज्ञान आदि इस कृति में स्पष्ट दिखाई देता है। डॉ. भंडारी ने इस संग्रह को गागर में सागर जैसा बनाया है।

संग्रह की 34 कहानियां बालसाहित्यकारों के सहज सरल जीवन का अनुभव हैं। इन कथाओं के लेखक वैज्ञानिक, इंजीनियर, शिक्षक आदि हैं जो अपने कर्म में भी स्थापित हैं।

संकलन में सामाजिक सरोकारों से जुड़ी कई कहानियां हमें आकर्षित करती है। कृति की एक-एक कहानी पर बहुत कुछ कहा जा सकता है। कहानियां मोम से दिलों में रोशनी का मकाम रखती हैं। समग्र संकलन पठनीय और संग्रहणीय है। विमला भंडारी की कहानी 'डरपोक लड़की' बाल में काकरोच से डरने वाला वह स्वभाव है जो अनावश्यक रूप से डर पैदा करता है। यहां उनका चिंतन और विज्ञान दोनों रुपायित होते हैं। राजकुमार जैन 'राजन' सामाजिक सरोकारों के रचनाकार हैं। गोविन्द शर्मा बाल स्वभाव के चितेरे। संकलन की अधिकांश कथाएं शब्द-दर-शब्द बिम्ब-दर-बिम्ब आगे बढ़ती जाती हैं और पाठकीय रोचकता को प्रभावित करने में सफल रहती हैं। साहित्यगार, जयपुर ने इसे प्रकाशित किया है।

-जितेन्द्र निर्मोही

देवनानी द्वारा स्कूली छात्राओं को साइकिल, स्वेटर वितरित

उदयपुर। शिक्षा राज्यमंत्री वासुदेव देवनानी ने हिरण मगरी सेक्टर 4 में आयोजित राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के कार्यक्रम में मेधावी छात्राओं को राज्य सरकार की साइकिलें तथा कक्षा एक से पांचवी तक की जरूरतमद छात्राओं को स्वेटर वितरित किए। इस अवसर पर सांसद अर्जुनलाल मीणा, सिंधी अकादमी अध्यक्ष (राज्यमंत्री दर्जा) हरीश राजानी सहित शिक्षा विभाग के अधिकारी एवं आमजन उपस्थित रहे। देवनानी ने कहा कि राज्य सरकार ने बच्चों में शिक्षा के साथ राष्ट्रप्रेम की भावना जगाने हेतु पाठ्यक्रम में कई बदलाव किए है। मेधावी छात्राओं को अब तक 9 लाख साइकिलें वितरित एवं 30 हजार लेपटॉप प्रदान किए गए है। पांच किलोमीटर दूर से स्कूल आने वाली छात्राओं को ट्रांसपोर्ट कूपन देकर राज्य सरकार ने बालिका शिक्षा को प्रोत्साहित करने का प्रयास किया है। देवनानी ने लीक से हटकर कार्य करने वाले युवाओं एवं संस्थाओं को 'उदयवीर' सम्मान से भी सम्मानित किया।

गवारिया को एक लाख का पुरस्कार

उदयपुर। फोटो जर्नलिस्ट ताराचंद गवारिया को ऑनलाईन फोटो प्रतियोगिता में नेशनल अवार्ड से नवाज़ा गया। इसके तहत उनका सिंहस्थ महाकुंभ मेले में खींचा गया साधुमंडल के साथ हिरण के फोटो का चयन किया गया और एक लाख रुपये का पुरस्कार प्रदान किया गया।

उल्लेखनीय है कि इसी फोटोग्राफ पर चित्रकुट धाम स्थित रावतपुरा सरकार न्यास की तरफ से सिंहस्थ कुंभ विषय पर आयोजित हुई फोटोग्राफी प्रतियोगिता में भी उन्हें एक लाख रुपये का प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया था। नागा साधुओं की दीक्षा से संबंधित यह जूना अखाड़ा की तरफ से सिंहस्थ महाकुंभ की भूखी माता घाट पर हुई पहली नागा दीक्षा के दौरान लिया गया था। इस फोटो में दीक्षा के दौरान मूसलाधार बारिश में एक हिरण अपने स्वामी (नागा साधु बनने वाला) के पास खड़ा था। फोटो में गवारिया ने तेज बारिश में कांपते नागा साधु और बारिश में भीगते हुए हिरण को क्लिक किया था।

गोइन्का पुरस्कारों के लिए प्रविष्टियां आमंत्रित

कमला गोइन्का फाउण्डेशन के प्रबंध न्यासी श्यामसुन्दर गोइन्का ने प्रेस विज्ञप्ति द्वारा दक्षिण भारत के हिन्दी साहित्यकारों के लिए निम्न पुरस्कारों की प्रविष्टियां आमंत्रित की हैं। इक्कीस हजार के प्रत्येक पुरस्कार के लिए हिन्दी पुस्तक के लिए 'बाबूलाल गोइन्का हिन्दी साहित्य पुरस्कार', हिन्दी से कन्नड़ या कन्नड़ से हिन्दी में अनुवादित पुस्तक के लिए 'पिताश्री गोपीराम गोइन्का हिन्दी-कन्नड़ अनुवाद पुरस्कार', हिन्दी से तेलुगु या तेलुगु से हिन्दी में अनुवादित पुस्तक के लिए 'गीतादेवी गोइन्का हिन्दी-तेलुगु अनुवाद पुरस्कार', हिन्दी से तमिल या तमिल से हिन्दी में अनुवादित पुस्तक के लिए 'बालकृष्ण गोइन्का अनुदित साहित्य पुरस्कार', हिन्दी से मलयालम या मलयालम से हिन्दी में अनुवादित पुस्तक के लिए 'सत्यनारायण गोइन्का अनुदित साहित्य पुरस्कार' के लिए वर्ष 2007-2017 के बीच की अवधि में प्रकाशित पुस्तक की चार-चार प्रतियां, पत्र एवं पासपोर्ट आकार की दो फोटो बैंगलोर कार्यायल में सचिव कमलेश यादव को 10 जनवरी 2018 तक भेजने का आग्रह है।

पल्स का पाइनऐप्पल फ्लेवर लॉन्च

उदयपुर। डीएस ग्रुप ने अपनी कॉन्फेक्शनरी उत्पाद श्रेणी का विस्तार करते हुए एक नया फ्लेवर 'पल्स पाइनऐप्पल' लॉन्च किया है। पास पास पल्स हार्ड बॉइल्ड कैंडी सेग्मेंट में पहले से ही अग्रणी स्थान पर है। पल्स के मौजूदा लोकप्रिय फ्लेवर कच्चा आम, ग्वावा और ऑरेंज के साथ अब नया 'पल्स पाइनऐप्पल' भी बाज़ार में उपलब्ध होगा। यह नई कैंडी पिलो पैक में 1 रुपए की कीमत पर उपलब्ध होगी। डीएस ग्रुप के न्यू प्रोडक्ट डेवलपमेंट के वाइस प्रेसिडेंट शशांक सुराना ने कहा कि डीएस ग्रुप ने वर्ष 2015 में कच्चा आम फ्लेवर के साथ इस कैंडी की शुरुआत की। देश के प्रमुख शहरों में कुछ महीने पहले किये गये टेस्ट मार्केटिंग में 'पल्स पाइनऐप्पल' को काफी उत्साहजनक प्रतिक्रिया मिली है। डीएस ग्रुप के वितरण नेटवर्क का लाभ उठाते हुए, टारगेट ग्रुप तक पहुंचने के लिए समूचे देश में कैंडी लॉन्च की जाएगी। पल्स पाइनऐप्पल के लॉन्च के साथ ही तथा मार्केट में सैंपलिंग जैसी गतिविधियां भी की जाएंगी। डीएस ग्रुप ने वर्ष 2012 में 'पास पास चिंगल्स' – मिनी च्यूइंगम को लॉन्च करके कन्फेक्शनरी व्यवसाय में कदम बढ़ाया था। कंपनी के प्रमुख ब्रांड 'पास पास' को कन्फेक्शनरी व्यवसाय में परिवर्तनकारी उत्पादों के व्यापक दायरे में पुर्नस्थापित किया था। परंपरागत मुखवास से लेकर मिनी च्यूइंगम 'चिंगल्स' तक डीएस अपने कन्फेक्शनरी में मिंट, टूटी फ्रूटी और कोला फ्लेवर्स जैसे पसंदीदा स्वाद मुहैया कराता है।

'सर्विस ऑन व्हील्स' की शुरुआत

उदयपुर। बजाज आलियांज लाइफ इंश्योरेंस कंपनी की तरफ से देश के कई शहरों में एक विशेष सेवा, नवीकरण और जागरूकता अभियान का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें पॉलिसीधारकों को अपनी जीवन बीमा पॉलिसी का नवीनीकरण करने में मदद की जाएगी। कंपनी ने आज उदयपुर में अपनी इस अनूठी पहल- 'सर्विस ऑन व्हील्स' की शुरुआत की।

बजाज आलियांज लाइफ के हैड (ऑपरेशन्स एंड कस्टमर सर्विस) कैजाद हीरामानेक ने कहा कि इस पहल के तहत एक विशेष मोबाइल वैन को एक ग्राहक सेवा कार्यकारी और अन्य बुनियादी ढांचे से लैस किया जाएगा, ताकि पॉलिसी संबंधी सभी सेवाएं उपलब्ध कराई जा सकें। नवीनीकरण प्रीमियम का संग्रह, पॉलिसी से जुड़ी कोई सर्विस रिक्वेस्ट दर्ज करने और प्राप्ति स्वीकार करने जैसे काम इस दौरान किए जाएंगे।

पूरे उदयपुर में हिरण मगरी सेक्टर 4, सेक्टर 14, आनंद प्लाजा, बैंक तिराहा, फतेहपुरा सर्किल, सेलिब्रेशन मॉल (भुवाणा) जैसे इलाकों में ग्राहकों को उनके घरों पर ही सेवाएं उपलब्ध कराई जाएंगी। साथ-साथ अपने ग्राहक जागरूकता पहल के एक भाग के रूप में कंपनी ग्राहकों के साथ जुड़ने के लिए इन स्थानों पर नुक्कड़ नाटक का आयोजन भी कर रही है और उन्हें अपनी जीवन बीमा पॉलिसी को सक्रिय बनाए रखने के महत्व पर शिक्षित करने का प्रयास किया जाता है, ताकि वे जीवन कवर, बोनस और अन्य बहुत कुछ लाभ भी हासिल करते रहें।

श्री कैजाद हीरामानेक ने कहा कि यह गतिविधि अपने ग्राहकों को सेवा प्रदान करने में सहायता करने के लिए डिजाइन की गई है, ताकि वे अपनी जीवन बीमा पॉलिसी को चालू रख सकें और वे अपने परिवार को सुरक्षा प्रदान करने के साथ ही दीर्घकालिक लाभ भी अर्जित कर सकें। हमारी सर्विस वैन विभिन्न शहरों और कस्बों में जाएगी, प्रमुख स्थलों पर आसानी से नजर आने वाले स्थानों पर खड़ी रहेगी, ताकि ग्राहक आसानी से आएं और वे सारी सुविधाएं उठा सकें, जो उन्हें कंपनी के शाखा कार्यालयों और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर मिलती हैं। इससे हमारे ग्राहकों के लिए प्रक्रिया और आसान और तेज हो जाएगी।

मैं तुम्हारी सबसे बड़ी प्रशंसक हूँ : दीपिका

उदयपुर। दीपिका ने आलिया को एक पत्र लिखा : मैं तुम्हारी सबसे बड़ी प्रशंसक हूँ। हाल ही में, जबकि आगामी

लक्स गोल्डन रोज पुरस्कार के लिए शूटिंग चल रही थी, आलिया को एक खास पत्र मिला। यह एक ऐसा पत्र था जो आज की ब्यूटी क्वीन दीपिका पादुकोण ने आलिया की प्रशंसा में लिखा। उन्होंने लिखा –

प्रिय आलिया, हाई-वे फिल्म में तुम बिना मेकअप के भी खूबसूरत लगी, लेकिन, रोड पर बिताए वो 52 मुश्किल दिन, किसी को नजर नहीं आए। आलिया तुम हो सबसे छोटी, पर मेहनत करने में सबसे बड़ी। तुम्हारी सबसे बड़ी प्रशंसक, दीपिका। यह इस एक्ट्रेस के लिए विशेष पल थे, जो एसएमएस और संचार की तेज दुनिया में रोमांचित करने वाला कृतज्ञता से भरा एक व्यक्तिगत पत्र था। हाल ही में इन दोनों एक्ट्रेस के बीच ट्विटर पर बहुत आपसी प्रेम व्यक्त किया गया।

आलिया ने दीपिका के बारे में प्रशंसा की, उसने बताया कि दीपिका ने अपनी आगामी फिल्म के लिए क्या किया और क्या नहीं किया! जिस पर दीपिका ने ट्वीट किया था, मेरी आलू .... आपका कोई जवाब नहीं, मैं तुमको प्यार करती हूं। ऐसा लगता है कि एक्ट्रेसेस के बीच प्रतिद्वंद्विता के दिन अब चले गए! जैसा कि हम उन एक्ट्रेसेस को देखते हैं, जो खुद पर विश्वास करती हैं और एक-दूसरे से जुड़ी होती हैं।

अशोक लीलैंड ने जीता डेमिंग पुरस्कार

उदयपुर। हिन्दुजा ग्रुप की अग्रणी इकाई अशोक लीलैंड की होसुर युनिट को 2017डेमिंग पुरस्कार से सम्मानित किया गया। डेमिंग पुरस्कार टोटल क्वालिटी मैनेजमेंट के लिए दिया जाने वाला सर्वोच्च सम्मान है। यह एक विश्वव्यापी और सबसे पुराना पुरस्कार है जिसे दुनियाभर में मान्यता प्राप्त है। यह पुरस्कार उन कंपनियों को दिया जाता है जिन्होंने ग्राहक अभिमुख व्यावसायिक लक्ष्य स्थापित किया है और उन्हें हासिल करने के लिए टोटल क्वालिटी मैनेजमेंट (टीक्युएम) लागू किया है। वर्ष 2016 में अशोक लीलैंड पंतनगर कारखाना दुनिया का पहला ट्रक और बस कारखाना और जापान के बाहर एकमात्र सीवी निर्माता था जिसने यह प्रतिष्ठित पुरस्कार जीता था। इस वर्ष होसुर युनिट के विजेता बनने के साथ अशोक लीलैंड लगातार यह पुरस्कार जीतने वाला जापान के बाहर एकमात्र व्यावसायिक वाहन निर्माता बन गया है।

अशोक लीलैंड के प्रबंध निदेशक विनोद के. दासरी ने कहा कि अशोक लीलैंड ब्रांड गुणवत्ता का प्रतीक है। हम अपने हर काम में सर्वश्रेष्ठ गुणवत्ता सुनिश्चित करने का प्रयास करते हैं। लगातार दूसरी इकाई द्वारा डेमिंग पुरस्कार प्राप्त करना हमारी प्रयासों और

विश्वास का प्रमाण है। अशोक लीलैंड की पूरी टीम को इस उपलब्धि पर गर्व है।

आर. शिवनेसन, वरीय वाइस प्रेसीडेंट-क्वालिटी, सोर्सिंग एवं सप्लाई चेन, अशोक लीलैंड ने कहा कि पंतनगर के बाद, अब हमारे होसुर कारखाने ने टीक्युएम के क्षेत्र में सर्वोच्च सम्मान हसालि किया है जिसे जापान के बाहर किसी भी व्यावसायिक वाहन निर्माता ने अभी तक हासिल नहीं किया था। यह कुशल मानव संसाधन प्रबंधन के साथ गुणवत्तापूर्ण पद्धतियों और ग्राहक अभिमुखता पर हमारी गहन फोकस का ही परिणाम है। हरिहर पी. वरीष्ठ वाइस प्रेसीडेंट – विनिर्माण एवं प्रोजेक्ट प्लानिंग, अशोक लीलैंड ने कहा कि हमारे दो-दो विनिर्माण संयंत्रों द्वारा डेमिंग पुरस्कार जीतना, हमारे लिए सचमुच बड़े गर्व की बात है। हम हमेशा ही विश्व-स्तरीय गुणवत्ता कायम रखते हुए अपनी सभी प्रक्रियाओं पर पूरा ध्यान देते हैं और यह पुरस्कार उसी का परिणाम है।

टैफे ने ग्राम उदयपुर 2017 में किसानों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को और मजबूत किया

उदयपुर। टैफे ने अपने उत्तम मैसी फर्ग्यूसन, आइशर ट्रैक्टर्स और एग्रीस्टार उपस्करों को प्रदर्शित करते हुए ग्राम उदयपुर 2017 में भाग लिया है। ट्रैक्टर्स एंड फार्म इक्विपमेंट लिमिटेड जो विश्व का तीसरा सबसे बड़ा एवं भारत का दूसरा सबसे बड़ा ट्रैक्टर विनिर्माता है, 7-9 नवम्बर को आयोजित इस कार्यक्रम का प्लैटिनम पार्टनर है।

राजस्थान सरकार और फेडरेशन ऑफ इंडियन चैम्बर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित इस कार्यक्रम ग्राम उदयपुर में राजस्थान की माननीय मुख्यमंत्री कुमारी वसुंधरा राजे, राजस्थान के कृषि मंत्री श्री प्रभुलाल सैनी और अन्य प्रमुख पदाधिकारियों और पूरे राज्य के सभी हिस्सों के कृषकों ने भाग लिया ।

'मेड फॉर इंडिया' बिलियन कैप्चर + स्मार्टफोन लॉन्च

उदयपुर। फ्लिपकार्ट, भारत के सबसे बड़े ईकॉमर्स बाजार स्थल ने 'मेड फॉर इंडिया' स्मार्टफोन 'बिलियन कैप्चर+' लॉन्च किया है। फ्लिपकार्ट के सह-संस्थापक एवं कार्यकारी चेयरमैन सचिन बंसल ने बताया कि स्मार्टफोन को खासतौर से भारतीय ग्राहकों की अनूठी जरूरतों को पूरा करने के लिए बनाया गया है। 'बिलियन कैप्चर+' की डिजाइन, अभियांत्रिकी, उत्पादन और परीक्षण भारत में ही किया गया है। यह फ्लिपकार्ट के प्राइवेट लेबल 'बिलियन' का हिस्सा है और इसकी बिक्री फ्लिपकार्ट पर शुरू हो गई है।

ऋषिकेश थीटे, कैटेगरी हेड, बिलियन ने बताया कि बिलियन कैप्चर+ में प्रीमियम मेटल बॉडी दी गई है जिसमें आसानी से पकड़ने वाले कर्व्स और इस्तेमाल में आसानी के लिए पीछे की ओर फिंगरप्रिंट सेंसर दिया गया है। इस स्मार्टफोन में 13एमपी+13एमपी का ड्युअल रियर कैमरा सेटअप दिया गया है। इसका शक्तिशाली रियर कैमरा आरजीबी एवं मोनोक्रोम सेंसर्स से संयोजित किया गया है। इस स्मार्टफोन में 3,500 एमएएच की बैटरी दी गई है। 3जीबी रैम+32जीबी रॉम की कीमत 10,999 रूपये और 4जीबी रैम+64 जीबी रॉम की कीमत 12,999 रूपये में उपलब्ध होगा। दोनों वैरिएंट दो रंगों -मिस्टिक ब्लैक और डेजर्ट गोल्ड में उतारे गये हैं।

सुपर आईओटी लॉन्च

उदयपुर। उद्यमों को आईओटी में सक्षम बनाने के लिए वोडाफोन ने सुपर आईओटी का लॉन्च किया जिसमें आईओटी समाधान जैसे व्हीकल ट्रैकिंग, असेट ट्रैकिंग (फिक्स एवं मोबाइल) तथा पीपल ट्रैकिंग (स्कूली छात्र एवं कर्मचारी) शामिल हैं। यह उद्योग जगत का पहला समाधान है जिसने डिवाइस, ऐप्लीकेशन, कनेक्टिविटी, सर्विस प्लेटफॉर्म, सपोर्ट एवं सिक्योरिटी (सुरक्षा) प्रबन्धन को सक्षम बनाया है। सुपर आईओटी के साथ उद्यमों को कई आपूर्तिकर्ताओं एवं सेवा प्रदाताओं के प्रबन्धन की समस्याओं से नहीं जूझना पड़ेगा। वे ऐप्लीकेशन विकास, डिवाइस प्रबन्धन, एनालिटिक्स और ऐप्लीकेशन इनेबलमेन्ट प्लेटफॉर्म का लाभ उठा सकेंगे। वे मैनेज्ड कनेक्टिविटी के ज़रिए अपनी सम्पत्ति का प्रबन्धन एवं नियन्त्रण कर सकेंगे।

वोडाफोन बिजनेस सर्विसेज़ के डायरेक्टर निक ग्लिडोन ने कहा कि आईओटी में ग्लोबल लीडर होने के नाते वोडाफोन विभिन्न क्षेत्रों जैसे ऑटोमोटिव, युटिलिटीज़, मैनुफैक्चरिंग, बैंकिंग और लॉजिस्टिक्स के साथ काम करता रहा है। हमने सम्पूर्ण सुरक्षित समाधान की आवश्यकता को समझते हुए सुपर आईओटी एंटरप्राइज़ेज़ का लॉन्च किया जो आईओटी डिप्लॉयमेन्ट प्रक्रिया की जटिलताओं को दूर करेगा। इससे उद्यम अपने कारोबार के परिणामों पर ध्यान दे सकेंगे तथा इनोवेशन एवं विकास को प्रोत्साहित कर डिजिटल रूपान्तरण को बढ़ावा दे सकेंगे। वोडाफोन की पांचवीं सालाना आईओटी बैरोमीटर रिपोर्ट के अनुसार 81 फीसदी भारतीय संगठनों का मानना है कि आईओटी डिजिटल रूपान्तरण के लिए अनिवार्य है।

बिड़ला कॉर्पोरेशन को 188.71 करोड़ का लाभ

उदयपुर। बिड़ला कॉर्पोरेशन लि. को वित्त वर्ष 2017-18 की दूसरी तिमाही में 188.71 करोड़ का लाभ हुआ है। वहीं बीते साल की समान तिमाही में कंपनी को 174.42 करोड़ रुपए का लाभ हुआ था। कंपनी का वित्त वर्ष की पहली छमाही में सीमेंट उत्पादन का आंकड़ा 6 मिलियन टन से ऊपर पहुंच गया है।

बिड़ला कॉर्पोरेशन लि. के चेयमेन हर्ष वी लोढ़ा ने कहा कि कंपनी ने सितंबर में समाप्त वित्त वर्ष 2017-18 की दूसरी तिमाही और पहली छमाही के वित्तीय परिणाम जारी किए हैं। इन समायोजित परिणामों में रिलायंस सीमेंट कंपनी प्राइवेट लि. (आरसीसीपीएल) के वित्तीय परिणाम शामिल हैं, जो कि कंपनी के पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी है।

इन आंकड़ों में आरसीसीपीएल के आंकड़े 22 अगस्त, 2016 से शामिल किए गए हैं। कंपनी के बिड़ला कॉर्पोरेशन में पूरी तरह से शामिल होने के बाद उत्पादन और बिक्री में भी बढ़ोतरी दर्ज की गई है। दूसरी तिमाही में सीमेंट उत्पादन 27.1 लाख टन रहा जो कि बीते वर्ष की समान अवधि में 21.30 टन था। सीमेंट बिक्री भी इस साल की दूसरी तिमाही में 26.5 लाख टन तक पहुंच गई जो बीते वर्ष की समान अवधि में 20.79 टन थी। कंपनी की कुल आय चालू वित्त वर्ष की दूसरी तिमाही में 1235.49 करोड़ रुपए रही जबकि बीते साल की समान अवधि में ये 1079.83 करोड़ रुपए थी। उन्होंने कहा कि कंपनी सीजनल तौर पर कमजोर तिमाही के दौरान अपने उत्पादन और बिक्री को बढ़ाने में कामयाब रही है और कंपनी को आरसीसीपीएल के अधिग्रहण का भी पूरा लाभ मिलने लगा है। मध्य भारत के हमारे मुख्य बाजारों में, मांग और कीमतें गंभीर रूप से रेत और एग्रीगेट्स की लंबी कमी से प्रभावित होती हैं, खासकर उत्तर प्रदेश में जो कंपनी की कुल बिक्री में 35 प्रतिशत योगदान करता है।

वंडर सीमेंट के साथ :7 क्रिकेट महोत्सव का आगाज

तीन राज्यों में खेले जाएंगे 300 मैच, 48 हजार खिलाड़ी लेंगे भाग

उदयपुर। वंडर सीमेंट के साथ:7 क्रिकेट महोत्सव का शुभारम्भ सोमवार को एक साथ तीन राज्यों में हुआ। उदयपुर में इस आयोजन का आगाज वंडर सीमेंट के निदेशक विवेक पाटनी, प्रेसीडेंट मार्केटिंग शैलेष मोहता एवं मैनेजिंग डायरेक्टर जगदीशचंद तोषनीवाल ने गाड़ियों के काफिले को झंडी दिखाकर किया।

विवेक पाटनी ने कहा कि क्रिकेट विश्व में सबसे ज्यादा खेला जाता है। हमारे यहां भी गांवों में यही स्थिति दिखने को मिलती है। हमारा मकसद है कि क्रिकेट में नव प्रतिभाओं को आगे लाकर उनको मंच प्रदान किया जाए इसलिए हम इस प्रकार के आयोजन कर रहे है।

श्री पाटनी ने कहा कि आने वाले समय में वंडर सीमेंट इसी तर्ज पर कबड्डी को भी प्रोत्साहन देने के लिए काम करेगा। यह आयोजन राजस्थान, गुजरात और मध्यप्रदेश में एक साथ हो रहा है जिसमें 300 जगहों पर गाड़ियों के साथ रोड शो का आयोजन किया जाएगा। ये गाडियां सात दिनों तक प्रतिदिन 100 किलोमीटर की दूरी तय करेंगीं और इस दौरान आयोजन को प्रमोट करने के साथ-साथ इच्छुक

खिलाड़ियों का पंजीयन भी करेगी।

श्री पाटनी ने बताया कि 40 लाख की ईनामी राशि के साथ इस साल के वंडर सीमेंट साथ:7 क्रिकेट महोत्सव में कुल 48,000 प्रतिभागी भाग लेंगे। इसमें राजस्थान, गुजरात और मध्यप्रदेश राज्य के अंतर्गत कुल जगहों पर 300 मैच खेले जाएंगे। सोलह चयनित टीमों के बीच 15 मैच खेलने के बाद एक तहसील विजेता टीम का चयन होगा। जो जिला स्तर पर खेलेंगे। इससे जिला विजेता टीम का चयन होगा।

जिला विजेता टीम आपस में खेलकर जोन पर खेलेंगी और 8 जोन विजेता टीम उदयपुर में प्लेऑफ के लिए खेलेंगे। फाइनल मैच उदयपुर में ही खेला जाएगा जहां टूर्नामेंट के विजेता की घोषणा की जाएगी।

वंडर सीमेंट साथ:7 क्रिकेट महोत्सव में 7 खिलाड़ियों की टीम के साथ 7 ओवर के मैच का फॉर्मेट तय किया है तथा हर उस टीम को उसे 7 रन बोनस देना तय किया है। जिसमें कम से कम एक महिला खिलाड़ी होंगी।

17वीं राष्ट्रीय पैरा स्वीमिंग चैम्पियनशिप सम्पन्न

पूर्व चैम्पियन महाराष्ट्र ने फिर जीती चैम्यिनशिप

उदयपुर। मेवाड़ की धरती पर आकर देशभर के दिव्यांगों ने जो प्रतिभा दिखाई है उससे पूरा मेवाड़ गौरवान्वित हुआ है। उदयपुर में पदक जीतने वाले

दिव्यांग खिलाड़ी पूरे विश्वभर में भारत का नाम ऊंचा करेंगे। ये विचार गृहमंत्री गुंलाबचंद कटारिया ने बतौर मुख्य अतिथि भारतीय पैरालिम्पिक कमेटी, नारायण सेवा संस्थान, पैरा स्पोर्ट्स एसोसिएशन राजस्थान एवं महाराणा प्रताप खेलगांव सोसायटी के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित 17वीं राष्ट्रीय पैरा स्वीमिंग चैम्पियनशिप के समापन समारोह में व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि इस प्रतियोगिता से पूरे देश में मेवाड़ का नाम रोशन हुआ है।

श्री कटारिया ने कहा कि प्रतिभा को निखारने में जो लोग आगे आए हैं वे साधुवाद के पात्र हैं। उन्होंने नारायण सेवा संस्थान के संस्थापक चेयरमेन कैलाश मानव, अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल का आभार जताते हुए कहा कि दिव्यांगों के लिए इतनी बडी प्रतियोगिता की जिम्मेदारी उठाकर संस्थान ने उदयपुर ही नहीं राजस्थान का मान बढाया है। संस्थान ने पिछले कई सालों में हजारों दिव्यांगों के जीवन में आशा की ज्योति जगाई है। कटारिया ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दिव्यांग नाम देकर जो सम्मान दिया है वह अपने आप में गौरव बढाने वाला है, क्योंकि इस नाम से ही दिव्यांग में उर्जा भर जाती है। वह सोचता है कि वह खुद अपने बल पर कुछ कर सकता है। कटारिया ने प्रतिभागियों को बताया कि उदयपुर में विश्वस्तर का इंडोर स्टेडियम तैयार हो रहा है जिसके लिए राज्य सरकार ने 17 करोड रुपए और मंजूर किए हैं। कटारिया ने कहा कि उनके अच्छे पुण्यों के कारण ही वे आज इस प्रतियोगिता में उपस्थित हो पाए हैं।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए जिला एवं सत्र न्यायाधीश देवेंद्र कच्छावा ने कहा कि दिव्यांग खिलाडियों का हौंसला देखकर ही वे गदगद हो गए हैं। ईश्वर ने इन्हें ऐसी विलक्षण प्रतिभा दी है जिससे दो हाथ और दो पांव वाले सामान्य लोग भी पीछे हैं। उन्होंने नारायण सेवा संस्थान का भी नेशनल प्रतियोगिता आयोजित करने के लिए आभार जताया।

नारायण सेवा संस्थान के संस्थापक चेयरमेन कैलाश मानव पदमश्री अलंकृत ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि नारायण सेवा संस्थान ने पोलियोग्रस्त बच्चों के ऑपरेशन और ईलाज का जो दायित्व लिया है उसको पूरा करने के लिए जुटा हुआ है। संस्थान अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने अतिथियों का आभार जताया। उन्होंने तीन दिन तक चले कार्यक्रम के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि इस प्रतियोगिता में ऐसे दिव्यांग खिलाडियों ने भी भाग लिया जिनको तैरता देखकर ही लोग अचंभित हो जाते हैं। उन्होंने कहा कि नारायण सेवा संस्थान आगे भी इस तरह की प्रतियोगिताओं के लिए पूरा सहयोग करेगा। साथ ही इंटरनेशनल स्तर की प्रतियोगिता तथा नेशनल पैरा गेम्स के लिए भी विचार बना रहा है।

इस मौके पर मुख्य अतिथि श्री कटारिया ने प्रतियोगिता में आए खास खिलाडी महाराष्ट्र के मोईन एम जुनैद के अलावा मध्यप्रदेश के बालक अब्दुल कादिर, कर्नाटक के गोपीचंद व राघवेंद्र अनवेकर, मध्यप्रदेश की रजनी झा, विंग कमांडर तपास, भारत का प्रतिनिधित्व कर मेक्सिको जा रहे सुयश तथा कंचनमाला का मंच पर सम्मान किया। श्री कटारिया ने स्विमिंग कोच और तीन दिनों तक पूरी व्यवस्था संभालने वाले महेश पालीवाल व इंटरनेशनल स्विमर गौरी सिंघवी का भी स्मृति चिन्ह देकर सम्मान किया। समारोह में तीन दिन की यादों का एक वृतचित्र भी दिखाया गया।

समापन समारोह में नगर निगम के महापौर चंद्रसिंह कोठारी, उदयपुर ग्रामीण विधानसभा के अध्यक्ष फूलसिंह मीणा, पैरालिम्पिक कमेटी ऑफ इंडिया के सीईओ शमशाद खान, चेयरमैन वी के डवास, राजस्थान तैराकी संघ के उपाध्यक्ष विनोद सनाढय, उदयपुर ओलम्पिक एसोसिएशन के अध्यक्ष सुधीर बक्षी, जिला खेल अधिकारी ललितसिंह झाला भी उपस्थित थे।

बुंदेली लोक के.....

(पृष्ठ दो का शेष)

इससे पूर्व भोपाल में वहां की आदिवासी लोककला परिषद द्वारा आयोजित लोकरंग महोत्सव में मुझे उनसे मिलना था तदनुसार मैं तो पहुंच गया पर डॉ. गुप्तजी नहीं आ पाये। यह महोत्सव 26 से 28 जनवरी 2001 को आयोजित रहा।

गुप्तजी से जब भी भेंट हुई, मुझे उन्होंने छतरपुर आने का निमंत्रण दिया। मैंने भी लोककला संगोष्ठी में तो कभी लोकानुरंजन समारोह में आने के लिए उनको लिखा किंतु न वे उदयपुर आ सके और न मैं ही छतरपुर जा सका।

उनके निधन के पश्चात उनके सुयोग्य पुत्र प्रवीण गुप्त ने उनकी स्मृति को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए 'प्रसंग नर्मदा' नाम से प्रतिवर्ष समारोह आयोजित कर 'लोककला संस्कृति रत्न' अलंकरण से किसी एक विद्वान को सम्मानित करने का नियोजन किया। इसी के साथ सम्मानित होने वाले विद्वान का किसी एक विषय पर व्याख्यान भी रखा। दो फरवरी 2008 को प्रवीणजी ने मुझे यह सम्मान प्रदान किया। मैंने इस अवसर पर 'लोक का रचनाकार लोक' विषय पर अपने विचार व्यक्त किये। मेरे से पूर्व लोकसंस्कृति रत्न अलंकरण डॉ. कपिल तिवारी (भोपाल) एवं डॉ. विद्याविन्दुसिंह (लखनऊ) को प्रदान किया गया। डॉ. विद्याविन्दुसिंह ने अवधी लोकसाहित्य पर बड़ा गहन अध्ययन किया है।

डॉ. नर्मदा प्रसाद गुप्त ने लोकसाहित्य को लोक की पैनी दृष्टि से विवेचित किया। हिंदी साहित्य की परंपरागत चली आ रही विविध धाराओं और उनसे संबंधित तत्वों, शिल्पों तथा सरोकारों के आदर्श को उन्होंने बुंदेली लोकसाहित्य का मापदंड नहीं बनाया अपितु वहां की लोक मनीषा में प्रवहमान लोकधाराओं तथा उनमें निहित वैशिष्ट्य को सांगोपांग रूप में लोक लहरी का ही महत्वपूर्ण पक्ष रहने दिया इसलिए उनके लेखन में कहीं लोक और शास्त्र का भेलमेल नहीं है। लोक की उज्ज्वल धारा को उन्होंने लोक की ही पावनता से सरोबार किये रखा। शास्त्रीय परिदृष्टि का थोपन नहीं बनने दिया।

उनका रहन-सहन और पहनावा भी लोकचित्त की अवधारणाओं का पृष्ठपोषक बना रहा। प्राध्यापक का जीवन जीते हुए भी उन्होंने कभी अन्यों पर उसकी छांट नहीं पड़ने दी। प्रवीणजी ने मुझे अपने निवास पर उनका बहुत सा वह साहित्य दिखाया जो अप्रकाशित था। वहीं डॉ. बहादुरसिंह परमार से मेरी भेंट हुई। वे बड़ी देर तक गुप्तजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के संबंध में बताते रहे। बुंदेलखंड के लोकसाहित्य, लोकसंस्कृति के क्षेत्र में गुप्तजी की देन के संदर्भ में उन्होंने बताया भी कि कई लोग विभिन्न अंचलों में उनकी प्रेरणा से अच्छा कार्य कर रहे हैं। स्वयं वे खुद भी 'बुंदेली बसंत' नाम से वार्षिक पत्रिका का संपादन कर रहे हैं जिसका एक अंक उन्होंने मुझे दिया भी और तब से अब तक प्रतिवर्ष ही मुझे वह अंक भिजवा रहे हैं। इसके माध्यम से डॉ. बहादुरसिंह ने भी कई युवा लेखक तैयार किये जो बुंदेली के लोकसाहित्य तथा संस्कृति की विविध विधाओं में लिख रहे हैं। ऐसे लोगों का एक अभिनव किन्तु उन्नत मंच बुंदेली बसंत के रूप में तैयार किया है।

गुप्तजी का लिखा बहुत सारा साहित्य अप्रकाशित है। लोकसाहित्य के अलावा भी साहित्य की विभिन्न विधाओं में उन्होंने विपुल परिमाण में आलोचनापरक लेखन दिया है। धीरे-धीरे वह प्रकाशित भी हो रहा है।

आवश्यकता है जैसा उनका बुंदेलखंड को लेकर लेखन रहा वैसा अन्य अंचलों का साहित्य भी तैयार हो ताकि बाद में सम्पूर्ण अंचलों, प्रांतों के लोकसाहित्य का भारतीय परिवेश में मौलिक अध्ययन कर भारतीयता के मूल एवं मुख्य उपजीव्यों की सिलसिलेवार ग्रंथावलियां तैयार हो सकें।

कान्यो मान्यो

जूं रौ मंदर

कान्यो बोल्यो के मान्या भाई, मनख जात आपणे नाम रा तो केई मंदर, स्मारक, हवेल्यां, तलाव, कुवा, बावड़ी, गाम, नगर, खेत, बगीचा, समाध्यां नै हजार चीजां वणालै पण दूजा जीवां नै भी कोई चिंतारे के नीं। मान्यो बोल्यो, असी वात नीं है। धरती माथै रा सगळाई जीव मिनख रा भाइला है। गाय माता सूं लैर बळद, सांड, मोर, चील, नेवळो, हाथी, गंडक, काछबो, वांदरो, टाळी, ऊंदरो सब रै नाम रा कोई न कोई निसांण मिलै।

मान्यो करम माथै आंगल्यां फेर बोल्यो कै ठेठ गामां मांय तो हाल फेर भी असी लुगायां मिनख मिल जावै जी सात-सात दनां तांई हांपड़वा रो नाम नी लै। लुगायां रै माथा मांय जुंवा पड़ जावै, लींका पड़ जावै। वी लीमोर्या रा बीज नै अरब-जरब घस परा वींरौ तेल माथा मांय मल दे। एक-एक बाल तेल पीधो कर दै। कान्यो बोल्यो पछै कई वै। मान्यो बोल्यो, पछै वै थारी मां रौ माथो। लींका मर जावै। अरे थूं कई जाणै। म्हारी मां केवै कै केई दाण लुगायां री कांचली-घाघरा अर आदम्यां री धोवती अंगरखी में जुवां पड़ जावती तो वानै दोई हाथ दै अंगूठा रै नख बीचै लैर मार दैता।

कान्यो बोल्यो, राम-राम बापड़ी लींका रौ कई दोष। मान्यो बोल्यो, फैर सुण, कदी-कदी लींका अतरी पड़ जावती कै हाथ माथा मांय कचरतोई रै जावतो। म्हारी मां बालपणां मांय म्हारै माथाऊं लींका काढनै कांगसी रै दांतां नै लच्छा री डाट दै माथै फेरती तो नानी-नानी लींका तक वणी में आ जावती।

मान्यो बोल्यो, जुंवां री एक बखाण ओरूं बताऊं। गजरात मांय तो जुंवां रौ मंदर बण्योड़ो है। वठारा डॉ. भगवानदास पटेल म्हारा दोस्त है। वां जिकर कीधौ कै अठीनै अन्हिलवार नाम रौ गाम है जठै रतन जैन नाम रौ राजा व्यौ। वणी फरमान काढ्यो कै सगळा जीव हगा है। कीनेई मारणो नीं है। जीव चावै छोटो वो नै चावै मोटो, सगळा सरीखा है। वांनै मार्यां पाप लागै।

एक दाड़ै गुपतचर राजा नै खबर दीधी कै एक आदमी एक जीव री हत्या कर दीधी। राजा जासूस छोड्या जदी पतो लागो कै अन्दाता एक म्हाजन आपणी माथा मायळी जूं मार दीधी। यो कई पाप नीं है। राजा बोल्यो कै जूं भी जीव है। पाप चढग्यो है।

जदी म्हाजन राजदरबार हाजर व्यो। राजा सजा दीधी कै जूं रौ पाप उतारण खातर एक मंदर वणायो जावै। म्हाजन पक्को जैनी हो वणी सोच्यो कै जूं जीव तो है ही। पाप तो चढ्यो है। जेल री सजा भी भोगणी पड़ जावती तो म्हारो तो मूंडौ काळो व्है जावतो। जदी वणी आपणी जायदाद बैच नै मंदर बणायो जीं रौ नाम जूं रौ मंदर आजतांई वीं री यादगीरी राख मेळी है।

मेनार में देश-विदेश के पक्षियों का कलरव

शहर से मात्र 40 किलोमीटर की दूरी पर स्थित परिंदों का स्वर्ग माने जाने वाले मेनार तालाब पर मध्य यूरोप, साईबेरिया, मध्य एशिया, मंगोलिया, तंजानिया, रशिया से आने वाले प्रवासी पक्षियों को देखने के लिए इन दिनों बर्डवॉचर्स जुटे रहे। पक्षी विशेषज्ञ विनय दवे के अनुसार इस तालाब पर पांच सौ से अधिक की संख्या में ग्रे लेग गूज देखे गये। उनमें बार हेडेड गूज, ब्राह्मणी डक, विजन, कॉमन पोचार्ड, शॉवलर, गेडवाल, टफटेल पोचार्ड, कॉमन टील, ब्लेक टेल गॉडविट, मार्श हेरियर, कॉमन क्रेन, रेड शैंक, सेण्ड पाईपर, विस्कर्ड टर्न, सी गल, रिंग प्लॉवर, प्रोटोनकॉल सहित कई अन्य प्रजातियों के स्थानीय पक्षी भी जमा हुए। जलक्रीड़ा के इस दृश्य को बांसवाड़ा के जनसंपर्क विभाग के सहायक निदेशक और पक्षीप्रेमी कमलेश शर्मा ने क्लिक किया है।

कहावतों के कहकहे (4)

(49) ओछी तनखा रेणो पर ओछे कायदे नी रेणो
(50) ओछो करै उतपात
(51) ओछो खाणो पण ओछो वास नीं वसणो
(52) ओत्यो वाण्यो राख रो ओत्यो राजपूत लाख रो
(53) ओदां घोड़ा नीपजै धरा नीपजै धान
(54) कईक सरधावै कईक जोरावरी
(55) कई बाडर रौ धीणो

समझदार व पढ़े-लिखे इंसान ही करते हैं जीवन में गलतियां : नील नितिन मुकेश

- डॉ. तुक्तक भानावत -

उदयपुर। फिल्म अभिनेता नील नितिन मुकेश ने कहा कि आज का दिन उनके जीवन के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। यहां आने पर पता चला कि

डायबिटिज का आंखों से भी उतना ही सीधा कनेक्शन होता है, जितना शरीर का धड़कन से। आज के परिवेश में अनपढ़ लोगों को कोई सीख दी जाए तो वे उसे आसानी से अपने जीवन में उतार देते हैं, लेकिन समझदार और पढ़े-लिखे इंसान सीख को जीवन में उतारने की बजाय उसके प्रति लापरवाह हो जाते हैं। इसका परिणाम भी उन्हें भविष्य में भुगतना ही पड़ता है।

ये विचार अभिनेता नील ने मंगलवार को वर्ल्ड डायबिटीज डे पर उदयपुर के अलख नयन मंदिर नेत्र संस्थान की ओर से राजस्थान में पहली बार उदयपुर से शुरू किए गए 'कम्यूनिटी बेस्ड डायबिटिक रेटिनोपेथी प्रोजेक्ट (सीबीडीआरपी) के उद्घाटन अवसर पर आयोजित समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि यह संस्थान अपने नाम से इस बात को परिभाषित करता है कि इस मंदिर पर आने वाला व्यक्ति कभी भी निराश नहीं लौटता। इससे अच्छी बात यह है कि इस महत्वाकांक्षी प्रोजेक्ट से मिराज समूह भी जुड़ा हुआ है।

अध्यक्षीय संबोधन में मिराज समूह के एमडी मदन पालीवाल ने कहा कि वे अलख नयन के संस्थापक डॉ. हरिसिंह चूंडावत से लंबे अरसे से जुड़े रहे। उनका व्यक्तित्व इतना व्यापक था कि आज भी जब उनका स्मरण करते हैं तो उनकी आकृति सामने आ जाती है। मैं डॉ. चूंडावत से उस समय पहली बार मिला, जब मेरी माताजी को आंख की समस्या हो गई थी। उन्होंने इलाज किया तो एक आंख को नया जीवन मिला, लेकिन बाद में दूसरी आंख का ऑपरेशन किसी अन्य से कराया तो वह आंख लंबे समय तक जीवित नहीं रह सकी। उनका जीवन संतत्वता से परिपूर्ण था और आज जब इतना बड़ा प्रोजेक्ट शुरू हो रहा है तो उनकी कमी खल रही है।

विशिष्ट अतिथि ऑपरेशन आई साइट यूनिवर्सल भारत के हेड प्रोग्राम मैनेजर फ्रेंकलिन डेनियन थे। मैनेजिंग ट्रस्टी डॉ. लक्ष्मी झाला ने बताया कि 'कम्यूनिटी बेस्ड डायबिटिक रेटिनोपेथी प्रोजेक्ट (सीबीडीआरपी) नामक इस प्रोजेक्ट को अलख नयन मंदिर नेत्र संस्थान ऑपरेशन आइसाइट यूनिवर्सल कनाड़ा के सहयोग से कार्यान्वित करेगा जिसमें मिराज समूह का सीएसआर के तहत महत्वपूर्ण योगदान रहेगा। उन्होंने बताया कि डायबिटीज के कारण आंखों पर जो नुकसान होता है उसके कारण डायबिटिक रेटिनोपेथी बीमारी हो जाती है। इसका उपचार लैजर, ऑपरेशन, इंजेक्शन या दवाइयों से संभव है। इस प्रोजेक्ट के तहत उदयपुर शहर में हुए ट्रायल पायलेट कैम्प में यही बात सामने आई। आंखों की जांच के दौरान लोगों को पता चला कि उन्हें गंभीर स्तर वाली डायबिटीज है।

अलख नयन के मेडिकल डायरेक्टर डॉ. एल. एस. झाला ने बताया कि 40 साल की उम्र के बाद सबको आंखों की नियमित जांच करवानी चाहिए तथा डायबिटीज का स्तर भी जांचते रहना चाहिए। राष्ट्रीय अंधता निवारण कार्यक्रम के अंतर्गत हाल ही में जारी किए गए आंकड़ों के अनुसार भारत में 6.2 करोड़ लोग मधुमेह (डायबिटीज) से ग्रसित हैं। डब्ल्यूएचओ की रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2025 तक भारत में विश्व के सर्वाधिक मधुमेह रोगी होंगे, लगभग 5 करोड़ 70 लाख। कनाडा स्थित एनजीओ-ऑपरेशन आई साइट के हाल ही में शुरू किए गए कार्यक्रम 'कम्यूनिटी बेस्ड डायबिटिक रेटिनोपेथी प्रोजेक्ट-सीडीआरपी' के अनुसार 40 वर्षों से अधिक आयु वर्ग के लोगों में से 10.91 व्यक्ति डायबिटिक रेटिनोपैथी से ग्रसित हैं। इनमें से 35 प्रतिशत लोगों को तत्काल उपचार की आवश्यकता है। इनमें से ज्यादातर डायबिटिक रोगियों को ये भी नहीं पता कि उनकी आंखों में लक्षण रहित रेटिना की समस्या उत्पन्न हो चुकी है जिनके कारण उनकी आंखों की रोशनी कभी भी पूर्णतया जा सकती है। प्रोजेक्ट डायरेक्टर मीनाक्षी चूण्डावत ने बताया कि भारत में 1997 में स्थापित अलख नयन मंदिर नेत्र संस्थान ऑपरेशन आई साइट यूनिवर्सन के साथ विश्वसनीय भागीदार है। अलख नयन मंदिर में जहां विश्व स्तरीय चिकित्सा सुविधाएं और मेडिकल सेवाएं पूर्णरूप से प्रशिक्षित एवं अनुभवी चिकित्सकों की देखरेख में उपलब्ध है।

हर फिल्म में कंट्रोवर्सी ढूंढ ही लेते हैं आलोचकः नील नितिन मुकेश

फिल्म यार-गद्दार में नकारात्मक किरदार निभाकर बॉलीवुड में अपनी अलग ही छाप छोड़ चुके अभिनेता नील नितिन मुकेश का कहना है कि यह कोई नई बात नहीं है कि आज पद्मावती फिल्म को लेकर विरोध किया जा रहा है। आलोचक हर फिल्म में कोई ना कोई कंट्रोवेर्सी तलाश ही लेते है। हालांकि वे संजय लीला भंसाली की फिल्म पद्मावती का हिस्सा नहीं हैं। इसलिए इसके संबंध में ज्यादा नहीं जानते। यदि मैं उस फिल्म का हिस्सा होता तो शायद ज्यादा जानकारी दे पाता। अभिनेता नील ने यह बात मंगलवार को पत्रकारों से बातचीत के दौरान कही। वे यहां अलख नयन मंदिर नेत्र संस्थान की ओर से आयोजित प्रोजेक्ट शुभारंभ समारोह में शिरकत करने आए थे। उन्होंने कहा कि कोई फिल्म बनती है तो पहले उसकी कहानी पर काम होता है। कई बार कहानी बदल जाती है और हम जैसा सोच रहे होते हैं वैसा फिल्म में नहीं दिखाई देता। कोई भी फिल्म बड़ी मेहनत से बनाई जाती है। कलाकार भी पूरी तल्लीनता से अपना किरदार निभाते हैं। उन्होंने एक सवाल के जवाब में कहा कि उन्हें पता है पद्मावती फिल्म जौहर पर बनी हुई है, लेकिन वे इस संबंध में कोई टिप्पणी नहीं कर सकते। वे ऑडियंस हैं। उन्होंने कहा कि वह हाल ही में लंदन से अपनी फिल्म फिरकी की शूटिंग पूरी करके आए हैं और जल्द ही बाहुबली फेम प्रभास व श्रद्धा कपूर के साथ एक्शन थ्रिलर सोहा की दुबई में शूटिंग शुरू करेंगे। यह फिल्म अगले साल दर्शकों के सामने आएगी।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।